हँसती दुनिया

₹10/-

वर्ष 42 अंक 1 जनवरी 2015

नव-वर्ष
मंगलमय हो

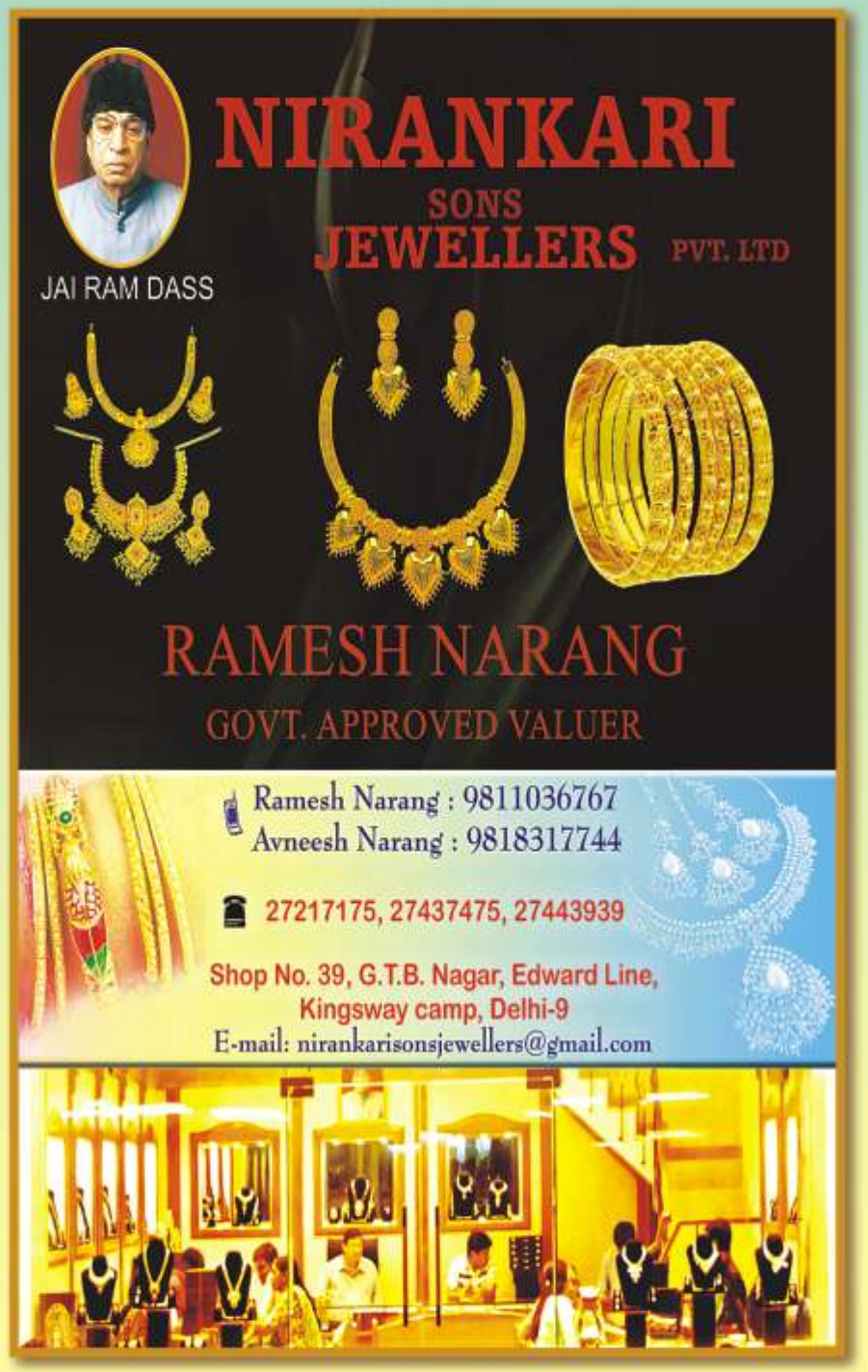
NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD
JAI RAM DASS
RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER
Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744
27217175, 27437475, 27443939
Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 42
अंक 1

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

जनवरी
2015

स्तम्भ

सबसे पहले	4
अनमोल वचन	6
जन्म दिन मुबारक	12
समाचार	18
भैया से पूछो	34
पढ़ो और हँसो	46
रंग भरो परिणाम	48
आपके पत्र मिले	65

चित्रकथा

दादा जी	13
चम्पू	53

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

राजा का सच्चा धर्म	महेन्द्र सिंह शेखावत 7
गुण अपनी जगह	राधेलाल नवचक्र 9
संजीवनी	दिनेश राय 19
ग्वालिन की सूझ	राधे लाल 'नवचक्र' 27
चिड़िया का उपहार	सीताराम गुप्ता 36
तो दुःख और भी बढ़ जाता	कमल सोगानी 57
सच्चा न्याय	राजेन्द्र यादव 59

कविताएं

गीत खुशी के गाओ	डॉ. परशुराम शुक्ल 5
सर्दियों को त्यौहार	महेन्द्र कुमार वर्मा 11
नये साल की खुशबू	कमल सिंह चौहार 17
गुलाब, गेंदा	अंकुश्री 23
चाँद सितारे	दिनेश दर्पण 28
जाड़े का मौसम	मीरा सिंह 'मीरा' 33
सूरज	डॉ. तारा निगम सूरज 43
काम नेक हो	डॉ. हरीश निगम 43
नया साल	विद्या प्रकाश 51
आ गई ठण्ड	सुनील कुमार शर्मा 58

विशेष/लेख

विज्ञान प्रश्नोत्तरी	घमण्डीलाल अग्रवाल 22
पक्षियों की यात्राएं	गोपाल जी गुप्त 24
पैसे का उपयोग	अर्चना जैन 26
घमण्डी मक्खी	सुरेश 29
नेकी कर	नरेश 30
दया के सागर न्यूटन	दिनेश दर्पण 31
सन्त की महत्ता	राजेश चौधरी 32
काली रात के जंगली लुटेरे	कमल सोगानी 44
नींव का पत्थर	राधेलाल नवचक्र 45
आत्मविश्वास	अर्जुन क्वात्रा 52
शहद: स्वाद और सेहत का अनोखा ...	कैलाश जैन 62
ऊँट की पीठ पर कूबड़	पृथ्वीराज 64

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रभारी पत्रिका –सी.एल. गुलाटी

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

मंगल कामना – दिल से

नव–वर्ष का आगमन इस बात का प्रमाण है कि पूर्व वर्ष का हर लम्हा, हर दिन, हर माह बीत चुका है। अब वह अतीत का हिस्सा बन चुका है। जब से हमने होश सम्भाला, तब से ही हम हमेशा हर वर्ष, नव–वर्ष का स्वागत करते आए हैं। हर वर्ष कोई न कोई विचार, संकल्प या प्रेरणा लेकर उसको अपनाने का प्रयास करते रहे हैं। यह वर्ष भी अपने निहित समय पर आयेगा और हम फिर अपने मित्रों, सम्बन्धियों इत्यादि को नव–वर्ष की शुभ एवं मंगल कामनाएं देंगे। शुभ कामनाएं देना अच्छा भी लगता है। प्रकृति सभी को हवा, पानी रोशनी आदि प्रदान करती है और यह एक वास्तविक तथ्य है। नहीं तो हम एक पल भी जीवित नहीं रह सकते थे।

क्या हम सबको शुभ एवं मंगल कामनाएं देते हैं? यह तो वास्तव में ही सोचने का विषय है।

अगर हम वास्तव में दिल से अपने ही परिवार जनों, मित्रों एवं सगे सम्बन्धियों को शुभ एवं मंगल कामनाएं देते तो अब तक हमारे मित्र सगे सम्बन्धी सुखी हो गये होते। ऐसा लगने लगता है कि हमारी शुभ एवं मंगल कामना कहीं आधी–अधूरी तो नहीं? वर्ष भर हम संसार में जीते हैं और व्यवहार करते रहते हैं, हमारा व्यवहार उन सब के प्रति क्या वही होता है जिसका हम नव–वर्ष में अभिनन्दन करते समय करते हैं।

आओ नव–वर्ष में ऐसा व्यवहार सभी के साथ करें जैसा व्यवहार हम स्वयं अपने लिए दूसरों से अपेक्षा करते हैं। हम स्वयं शुद्ध, निर्मल, विनम्र, व्यवहार की पहल का बीज डालें वह बहुत जल्दी ही स्फुटित हो कर हमें फल प्रदान करने लगेगा। इसी शुभ भाव के साथ समस्त जीवों को नव वर्ष मंगलमय हो।

–विमलेश आहूजा

बालगीत : डॉ. परशुराम शुक्ल

गीत खुशी के गाओ

झूमो नाचो मौज मनाओ।
गीत खुशी के गाओ।

बीत गया है साल पुराना।
नये साल का खुला खजाना।
ले लो जितना ले सकते हो,
लेकर खुशी मनाओ।

नये साल की बात नयी हो।
नया सबेरा रात नयी हो।
नये साल में सबसे हट कर,
अपना लक्ष्य बनाओ।

सागर तल में पैर जमाओ।
नभ की ऊँचाई तक जाओ।
तुमसे बड़ा नहीं है कोई,
दुनिया को दिखलाओ।

झूमो नाचो मौज मनाओ।
गीत खुशी के गाओ।

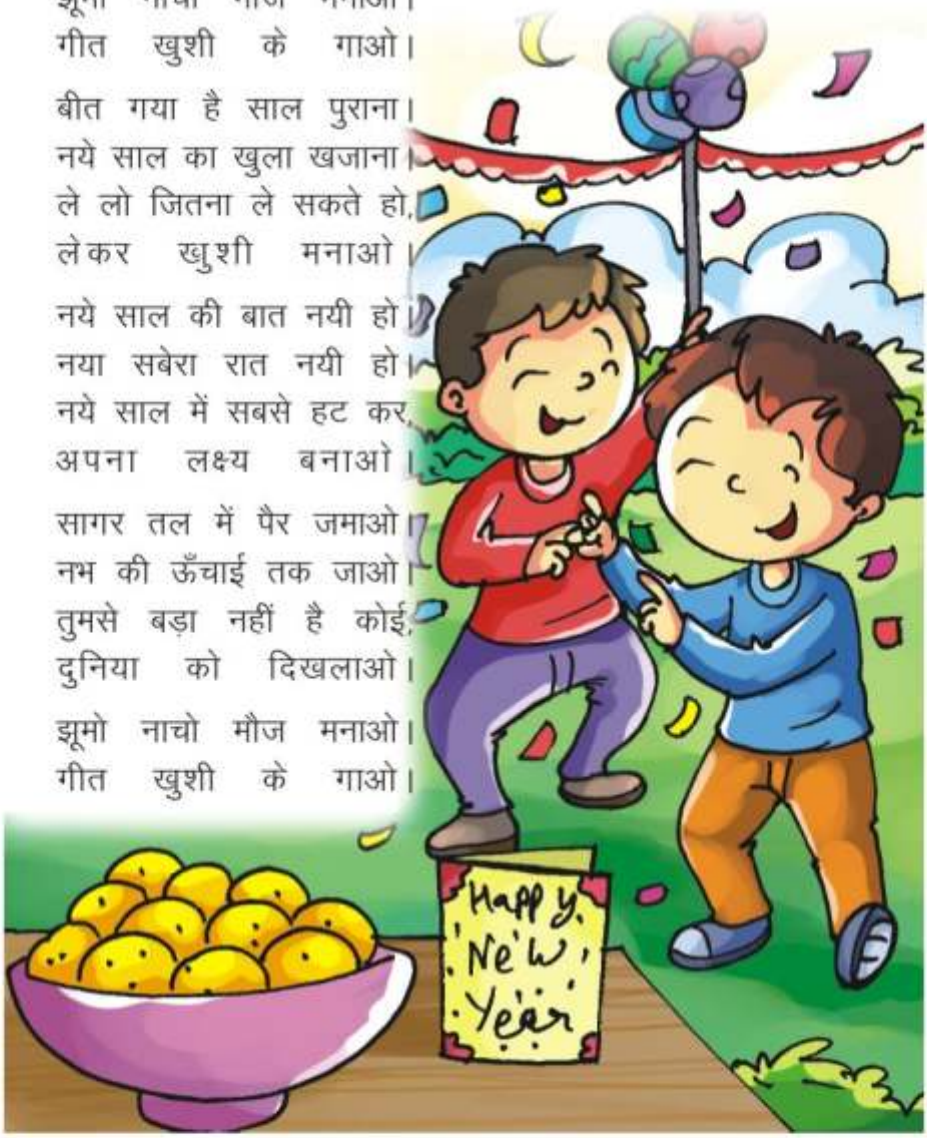

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : प्रियंका चोटिया 'आंचल' (हनुमानगढ़)

- आत्म–सम्मान मनुष्य के दुर्गणों को वश में रखने की पहली लगाम है।
- वह वीर नहीं है जो हजारों को जीतता है, वीर वह है जो मन को जीतता है।
- पैसे से सुख–साधन खरीद सकते हैं पर शान्ति नहीं।
- उस मनुष्य से अधिक दरिद्र कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है।
- जीने के लिए खाना अच्छा है, परन्तु खाने के लिए जीना महापाप है।
- व्यवहार वह आईना है, जिसमें हर किसी का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है।
- कोई अपशब्द कहे खामोश रहो, कोई तमाचा मारे चुप रहो, जब वह चुनौती दे उसका डटकर मुकाबला करो।
- धनवान रोगी से तंदुरुस्त मजदूर अच्छा है।
- शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं उत्पन्न होती। वह अजेय संकल्प से उत्पन्न होती है।
- मनुष्य की परीक्षा उनके कार्यों से होती है, शब्दों से नहीं।
- महान कर्म महान मस्तिष्क को सूचित करते हैं।
- यह धरती ही हमारे कर्मों की भूमि है।
- जिनमें उत्साह नहीं है, वे केवल काठ के पुतले हैं।
- तुम ईश्वर और कुबेर (माया) दोनों की उपासना एक साथ नहीं कर सकते।
- जीवन का एक पल करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं के देने पर भी नहीं मिलता है।
- सच्चे संयमी वही हैं जो प्रलोभन होते हुए भी नहीं फिसलते।
- त्रुटियों के संशोधन का नाम ही उन्नति है।

कथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

राजा का सच्चा धर्म

प्राचीन काल में जीमूतवाहन नाम के एक बहुत बड़े प्रतापी और परोपकारी शासक हुए थे जो शालिवाहन के पुत्र थे। शालिवाहन ने शक संवत् का प्रारम्भ किया था।

जीमूतवाहन बचपन से ही बहुत दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति के थे।

एक बार वह वन–विहार के लिए गये हुए थे। वन में विचरण करते–करते सहसा उन्हें किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी।

उन्होंने पास जाकर देखा तो शंखचूर्ण सर्प की माता रो रही थी। जब उन्होंने शंखचूर्ण की माता से रोने का कारण पूछा तो वह बोली– आज मेरा इकलौता पुत्र शंखचूर्ण गरूड़ के आहार के लिए जा रहा है।

यह सुनकर जीमूतवाहन बोले– "माता, तुम चिंता मत करो! तुम्हें रोने की आवश्यकता नहीं है। अब मैं तुम्हारे पास हूँ और मैं एक राजा हूँ। राजा का सच्चा धर्म होता है कि वह सबकी रक्षा और सहायता करे। आज तुम्हारे पुत्र के स्थान पर गरूड के पास मैं जाऊंगा।" कहते हुए जीमूतवाहन वहाँ से रवाना हो गये और उस स्थान पर जाकर सो गये, जो स्थान गरूड के आहार के लिए नियत था।

अपने निर्धारित समय पर जब गरूड़ ने आकर जीमूतवाहन पर

अपनी चोंच मारी तो उसे तुरंत आभास हो गया कि आज मेरे सामने कोई अन्य प्राणी है। अगले ही पल उसने पूछा– तुम कौन हो? यहाँ क्यों लेटे हो? मेरा आहार कहाँ है?

जीमूतवाहन बोले– हे गरूडराज! मैं जीमूतवाहन राजा हूँ और आज तुम्हारा आहार हूँ क्योंकि आज शंखचूर्ण के स्थान पर मैं आया हूँ। आज मुझे ही अपने आहार के रूप में स्वीकार करो।

यह सुनकर गरूड का हृदय गद्‌गद् हो गया। वह मन ही मन सोचने लगा– एक तो यह राजा है जो दूसरों के प्राण बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहा है और एक मैं हूँ जो अपनी भूख मिटाने के लिए दूसरों के प्राण ले रहा हूँ। मुझे तो धिक्कार है। मेरी तुलना में तो यह राजा धन्य और महान है जो दूसरों के लिए अपने प्राण दे रहा है।

सोचते–सोचते गरूड का हृदय पश्चाताप से भर गया। अगले ही पल उसने राजा को छोड़ दिया और उससे वर मांगने को कहा।

जीमूतवाहन बोले– हे गरूडराज! आपने आज तक जितने भी सर्पों का आहार किया है, उन्हें जीवित कीजिए और आगे सर्पों को न मारने का वचन दीजिए।

गरूड़ ने बड़ी प्रसन्नता के साथ राजा को वर देते हुए सभी सर्पों को जीवित किया और भविष्य में सर्पों को न मारने का वचन देते हुए वहाँ से रवाना हो गया।

इसके उपरांत सर्पों की माताओं ने भी बड़ी प्रसन्नता के साथ राजा जीमूतवाहन को धन्यवाद दिया और अपने पुत्रों से राजा के खेतों की रक्षा करने को कहा।

आज भी सर्प खेतों में चूहों को मार कर फसल की रक्षा करते हैं।

इस प्रकार जीमूतवाहन ने अपना धर्म निभा कर सर्प जाति की रक्षा की। आज भी जीमूतवाहन को बड़ी श्रद्धा के साथ याद किया जाता है।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

गुण अपनी जगह

एक नन्हीं लड़की चुपके से रसोईघर में जा घुसी। वहाँ कई चीजें रखी थीं। हड़बड़ी में उसने चीनी की जगह एक मुट्ठी नमक लेकर अपने मुँह में डाल लिया। अगले ही क्षण वह थू...थू... करके वहाँ से बाहर आ निकली।

अवसर पाकर चीनी व्यंग्य से बोली, ''नमक भाई, मैं और तुम तो देखने में एक जैसे हैं मगर तुम्हारा स्वाद कैसा है कि एक नन्हीं लड़की ने भी तुम्हें पसन्द नहीं किया। मुँह में तुम्हें रखते ही थू... थू... करके फैंक दिया और एक मैं हूँ जिसके मुँह में जाती हूँ वह मेरे मीठेपन से खुश हो उठता है।''

नमक ने चीनी की बात का बुरा नहीं माना। वह शांत स्वर में बोला, ''बहन, मेरी जहाँ जरूरत है, वहाँ मैं ठीक हूँ और जहाँ तुम्हारी जरूरत है, वहाँ तुम भी ठीक हो। उस लड़की ने तुम्हारे धोखे में मुझे मुँह में डाल लिया, इसी से थू...थू... कर बैठी।''

''ऊँ हूँ।'' चीनी घमंड से ऐंठकर बोली, ''मैं तो सभी जगह ठीक हूँ।''

''यह तुम्हारा भ्रम है।''

''नहीं, सच्चाई है।''

''फिर एक काम करो। वास्तविकता तुरंत मालूम हो जाएगी।'' नमक ने नम्रतापूर्वक कहा।

''कहो।''

''तुम मेरी जगह आ जाओ और मैं तुम्हारी जगह चला जाता हूँ। फिर देखते हैं, क्या होता है?''

''बहुत खूब!'' चीनी मान गई।

दोनों ने एक–दूसरे की जगह ले ली।

जब रसोइया भोजन बनाने लगा तो उसने दाल और सब्जी में नमक की जगह चीनी डाल दी क्योंकि दोनों ने अपनी जगह जो बदल ली थी।

दोपहर में घर के सभी लोग

खाने की मेज पर जब भोजन करने बैठे तो वह नन्हीं लड़की भी वहाँ मौजूद थी। रसोइये ने सबको बारी–बारी से भोजन परोसा। ज्यों ही सबने चावल और दाल का पहला कौर मुँह में डाला कि वे सभी थू...थू... कर उठे। मुँह का कौर उठाकर बाहर

फैंक दिया। फिर मुँह का जायका बदलने के लिए सबने मुँह में सब्जी डाली तो फिर पहले जैसी, स्थिति उत्पन्न हो गयी। इस बार भी सबने थू...थू... करके मुँह का कौर बाहर फैंका।

घर का मालिक अब रसोइये पर दहाड़ा, "आज तुम्हें क्या सूझी कि दाल और सब्जी में नमक की जगह चीनी डाल दी। सारा भोजन बर्बाद कर डाला।"

"भूल हो गई मालिक", रसोइये ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा।

बिना कुछ खाये सभी भोजन पर से उठ गये।

अब नमक बोला, "चीनी बहन, तुमने सब कुछ अपनी आँखों–कानों से देख–सुन लिया न! उस नन्हीं लड़की ने भी तुम्हें पसन्द नहीं किया। अब कहो, भ्रम टूटा या नहीं?"

"हाँ टूट गया।" चीनी ने अपनी भूल महसूस की।

"याद रहे, हर चीज का अलग–अलग अपना गुण होता है और वही उसकी पहचान भी होती है। जहाँ जिस चीज की जरूरत होती है, वहीं वह शोभा पाती है। जहाँ–वहाँ नहीं।"

चीनी को अब नमक की हर बात स्वीकार करनी पड़ी।

संता: तुमने मेरे जेब में हाथ क्यों डाला?
बंता : मुझे माचिस चाहिए थी।
संता : तुम मुझसे मांग सकते थे।
बंता : मैं अजनबियों से बात नहीं करता।

एग्जाम में जाने से पहले तुम सेंट क्यों लगा रहे हो?
प्रवीन : ताकि सेंट परसेंट नम्बर आयें। (100%)

– पिंकी, फैजाबाद

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

सर्दियों का त्यौहार

सर्दियों की आ गई बहार,
फूलों से बाग हुआ गुलजार।

ओस धरा पर बिछती रही,
शीत पवन करे अत्याचार।

रात की लंबाइयां बढ़ती रहीं,
दिवस छोटा सा मगर गुलजार।

पी रहे हैं वो गरमागरम चाय,
जो करते थे लस्सी से प्यार।

गरम वस्त्रों से लदे हैं लोग,
सर्दी का बस यही उपचार।

कर रहे हैं नित्य जो व्यायाम,
वो पाएंगे स्वास्थ्य का उपहार।

खाओ पीयो मस्त रहो दोस्तो,
सर्दियों की आ गई बहार।

जन्मदिन मुबारक

प्राची (उस्तान चौक,छ.ग.)

राकेश (भटिण्डा)

अवनी (मण्डला, म.प्र.)

नक्षा (सरदार नगर)

अरबीशा जोशी

साधना (काली जगदीशपुर)

कर्तव्य (भोपाल)

श्रेयांस (नेवादा पट्टी)

रचित कुमार (पाण्डेयपुर)

प्रिंस (दिल्ली)

निखिल (शिकोहाबाद)

आकाश (ग्वालियर)

भूमिका (नासिक रोड)

स्नेह (कठुआ)

अनुष्का (गया)

पारस (रायपुर)

सुदीप (चण्डीगढ़)

राधिका (कोटा)

सिमरन (भिवानी)

वंश (दोसांझ कलां)

वेदांत मौर्य (थाने)

महक (शिकोहाबाद)

विजय (काली जगदीशपुर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

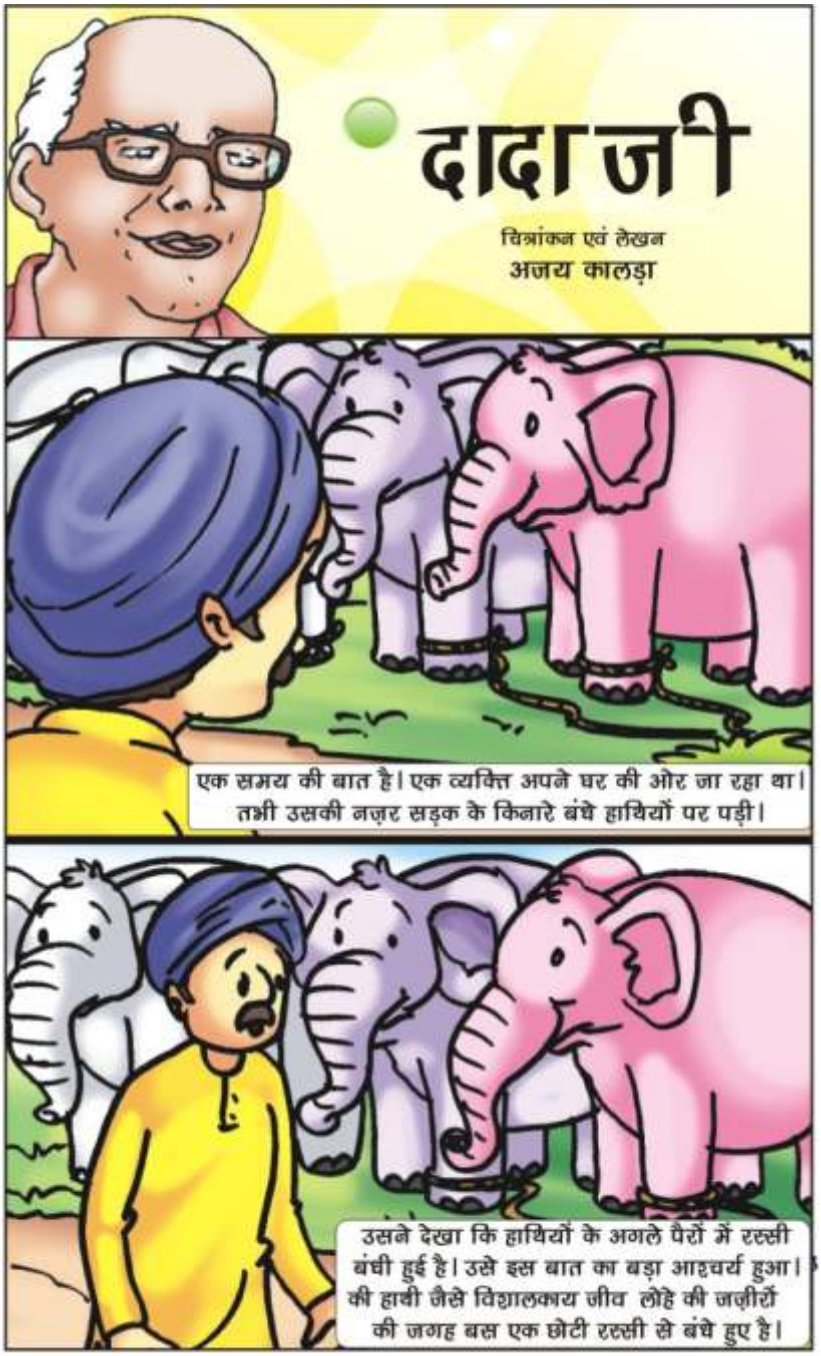
दादा जी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक समय की बात है। एक व्यक्ति अपने घर की ओर जा रहा था। तभी उसकी नज़र सड़क के किनारे बंधे हाथियों पर पड़ी।
उसने देखा कि हाथियों के अगले पैरों में रस्सी बंधी हुई है। उसे इस बात का बड़ा आश्चर्य हुआ। की हाथी जैसे विशालकाय जीव लोहे की जंज़ीरों की जगह बस एक छोटी रस्सी से बंधे हुए है।

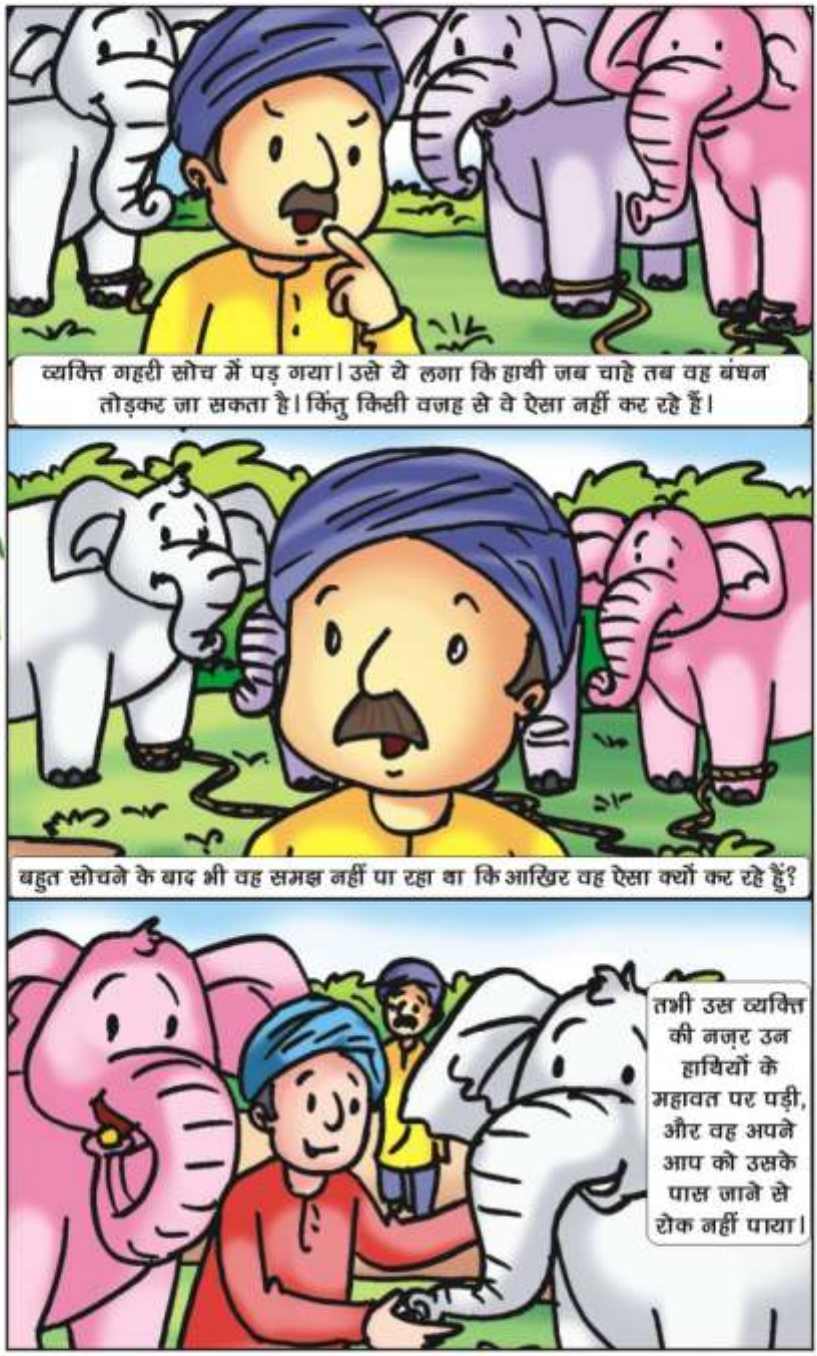
व्यक्ति गहरी सोच में पड़ गया। उसे ये लगा कि हाथी जब चाहे तब वह बंधन तोड़कर जा सकता है। किंतु किसी वजह से वे ऐसा नहीं कर रहे हैं।
बहुत सोचने के बाद भी वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर वह ऐसा क्यों कर रहे हैं?
तभी उस व्यक्ति की नज़र उन हाथियों के महावत पर पड़ी, और वह अपने आप को उसके पास जाने से रोक नहीं पाया।

उसने महावत से पूछा कि भाई भला ये हाथी किस प्रकार इतनी शांति से खड़े हैं और भागने का प्रयास नहीं कर रहे हैं?
तब महावत ने बताया, इन हाथियों को छोटी उम्र से ही इन रस्सियों से बांधा जाता है।
उस समय इनके पास इतनी शक्ति नहीं होती कि इस बंधन को तोड़ सके बार-बार प्रयास करने पर भी रस्सी ना तोड़ पाने के कारण उन्हें धीरे-धीरे यकीन होता जाता है कि वे रस्सियों को नहीं तोड़ सकते।

और बड़े होने पर भी उनका ये यकीन बना रहता है इसलिए वे रस्सी को कभी तोड़ने का प्रयास नहीं करते।
व्यक्ति महावत की बात सुनकर सोचा कि ताकतवर जानवर सिर्फ इसलिए बंधन नहीं तोड़ सकते क्योंकि वो इस बात में यकीन करते हैं।
उस दिन से उस व्यक्ति ने लोगों को ये वाक्य बताना और समझाना शुरू कर दिया कि हम में से हाथियों की तरह सिर्फ पहले मिली असफलता के कारण ये मान बैठते हैं कि हमसे यह काम नहीं होगा और अपनी बनाई मानसिकता की जंज़ीरों में जकड़े पूरा जीवन गुज़ार देते हैं।
याद रखिए असफलता जीवन का एक हिस्सा है और निरंतर प्रयास करने से ही सफलता मिलती है यदि आप भी ऐसे किसी बंधन मे बंधे हैं और आपको अपनी तरक्की से रोक रहा है तो उसे तोड़ डालिए क्योंकि आप हाथी नही इंसान है।

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

नये साल की खुशबू

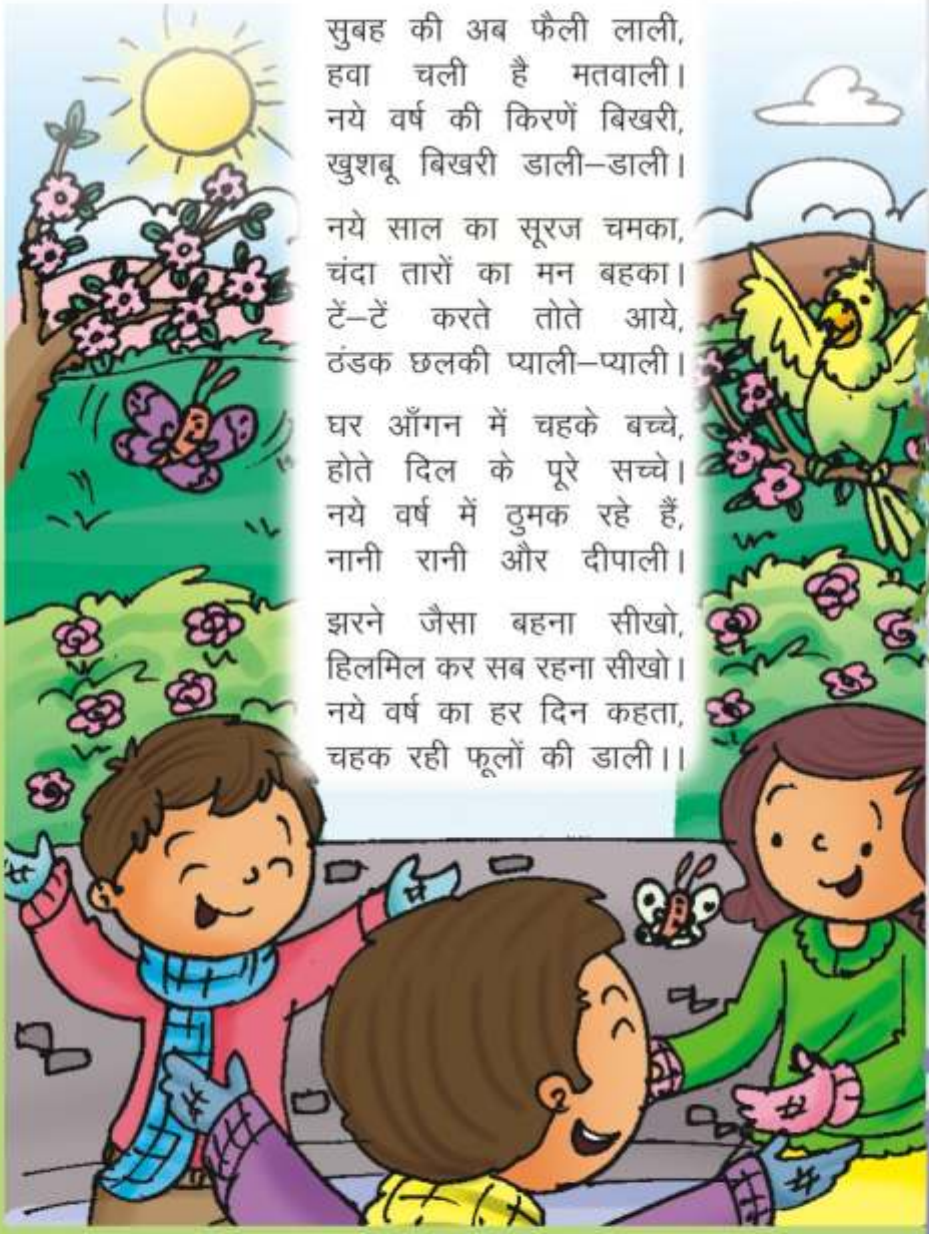

सुबह की अब फैली लाली,
हवा चली है मतवाली।
नये वर्ष की किरणें बिखरी,
खुशबू बिखरी डाली–डाली।

नये साल का सूरज चमका,
चंदा तारों का मन बहका।
टें–टें करते तोते आये,
ठंडक छलकी प्याली–प्याली।

घर आँगन में चहके बच्चे,
होते दिल के पूरे सच्चे।
नये वर्ष में ठुमक रहे हैं,
नानी रानी और दीपाली।

झरने जैसा बहना सीखो,
हिलमिल कर सब रहना सीखो।
नये वर्ष का हर दिन कहता,
चहक रही फूलों की डाली।।

समाचार

गुरु–वंदना

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की उपस्थिति में (दिल्ली में) हुए अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन (समागम) में हँसती दुनिया परिवार के सदस्यों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा गुरु–वंदना की।

बाल कहानी : दिनेश राय

संजीवनी

अंकुर और अनीश दोनों ही अच्छे मित्र थे। अंकुर के पिता गाँव के प्रधान होने के साथ–साथ काफी धनी भी थे। अनीश उसी गाँव के एक गरीब किसान का बेटा था। पर दोस्ती में अमीरी–गरीबी नहीं देखी जाती बल्कि दोस्ती तो मन मिलने की बात होती है। उस पर यदि एक दूसरे के विचार भी मेल खाएं तो सोने पर सुहागा हो जाता है।

अंकुर और अनीश इस बात के प्रमाण थे। दोनों ही पढ़ने व खेलने में अच्छे थे। होनहार छात्रों के रूप में दोनों अपने स्कूल में मशहूर थे। एक दिन की बात है– अंकुर और अनीश दोनों को बुखार हो गया और सुबह दोनों गाँव के डॉक्टर के पास अपने–अपने पिता के साथ पहुँचे। संयोगवश अनीश के पिता वहाँ पहले से ही पहुँचे हुए थे। डॉक्टर ने अनीश को देखा, दवा दी व उसके बदले में पांच सौ रूपये मांगे तो अनीश के पिता ने पैसे देने में असमर्थता जताई। इस पर वह डॉक्टर बोला– आगे से पैसे लेकर आना।

इतने में अंकुर अपने पिता के साथ वहाँ पहुँचा। अंकुर ने अनीश को देखा अंकुर से बात करनी चाही परन्तु बात नहीं कर पाया। अनीश के पिता के साथ हुई बातचीत अंकुर ने सुन ली थी, बातें सुनकर यह बहुत चिन्तित हुआ।

अंकुर के पिता को देखते ही डॉक्टर अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और सम्मानपूर्वक उन्हें बैठने को कहा फिर पूछा– मैं आपकी क्या सेवा करूँ।

अंकुर के पिता ने उसे अपने बेटे का बुखार चैक करने को कहा। डॉक्टर ने उसे देखा व उसे दवाई दे दी। फिर कहा– आपने यहाँ तक आने का कष्ट क्यों किया। मुझे ही बुलवा लिया होता, मैं खुद हाज़िर हो जाता।

–कोई बात नहीं। कितने पैसे हुए?

प्रधान जी आपसे क्या पैसे लेने। आपका बच्चा भी मेरे बच्चे के समान ही है और वह पुनः कुर्सी से खड़ा हो गया और फिर अंकुर के पिता को उनकी गाड़ी तक छोड़ने गया।

अंकुर को मन ही मन दुःख हुआ। उसे रह–रहकर विचार आ रहा था कि मेरा मित्र तो परेशान होगा। घर पहुँचते ही वह चुपचाप किसी को बिना बताए अपने मित्र के घर गया व उसके पिता को कुछ रुपये दे दिये व फिर उसी बुखार की हालत में वापिस आ गया। घर पहुँचकर भी उसे मित्र के बुखार की चिन्ता सताने लगी। पलंग पर लेटे–लेटे भी वह चिन्ता में डुबा रहा। इसी कारण वह और उसका बुखार बजाय ठीक होने के और बढ़ गया। जब गाँव के डॉक्टर से उसका बुखार ठीक नहीं हुआ तो उसने उसे बड़े अस्पताल में जाने की सलाह दी। अंकुर के पिता के पास पैसे की कमी तो थी नहीं वह उसे पास के अस्पताल में ले गये। अब तक अनीश ठीक हो चुका था। अंकुर के घर पर काम करने वालों से उसने पता किया तो मालूम हुआ कि उसका मित्र तो बीमार है और पास के बड़े अस्पताल में भर्ती है।

अंकुर के स्वास्थ्य में अब तक कोई सुधार नहीं हो पा रहा था। डॉक्टर अच्छी से अच्छी दवा को इस्तेमाल कर रहे थे। परन्तु लगता था कि रोग दवा से ठीक होने वाला ही नहीं।

इधर अनीश से रहा नहीं गया। दोनों मित्र मिले। दोनों आत्मविभोर हो गये। अनीश को ठीक देखकर अंकुर के चेहरे पर ऐसी प्रसन्नता की लहर दौड़ी कि डॉक्टर ने देखकर ही अनुमान लगा लिया कि इन दोनों में गहरी दोस्ती है। अब इस बात का एहसास डॉक्टर को होने लगा कि कोई भी दवा अंकुर को क्यों स्वस्थ नहीं कर पा रही थी। अब डॉक्टर ने अनीश को प्रतिदिन अंकुर से मिलने आने को कहा। अनीश अंकुर से प्रतिदिन मिलने आने लगा। देखते ही देखते अंकुर पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। अंकुर के पिता ने डॉक्टर को धन्यवाद देना चाहा तो डॉक्टर ने कहा– धन्यवाद देना है तो अपने बेटे के मित्र को दो जिसकी मित्रता ने संजीवनी का कार्य किया है और वह जल्दी से ठीक हो गया।

अंकुर के पिता ने अनीश को उस दिन गले लगा लिया अब अनीश की पढ़ाई का पूरा खर्च भी वहन करने लगे।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : गर्मियों में तालाब क्यों सूख जाते हैं?

उत्तर : गर्मियों में जब तापमान बढ़ जाता है, तो पानी के अणु टूट कर पृथक् हो जाते हैं और इधर–उधर विचरण करने लगते हैं। ज्यों–ज्यों तापमान बढ़ता जाता है, ये अणु हवा में पहुँच जाते हैं और पानी वाष्प में परिवर्तित होने लगता है। इस वाष्पीकरण क्रिया के फलस्वरुप ही गर्मियों में तालाब सूखने लगते हैं।

प्रश्न : नहाने के बाद ठण्ड क्यों लगती है?

उत्तर : नहाने के बाद पानी का वाष्पीकरण होने लगता है। जब शरीर हवा के संपर्क में आता है तो यह क्रिया अत्यधिक तीव्र हो जाती है। परिणामस्वरुप, शरीर का तापमान गिर जाता है और तुम्हें ठण्ड का अनुभव होता है। शरीर का तापमान गिरने का कारण शरीर द्वारा ऊष्मा का खर्च किया जाना होता है।

प्रश्न : लोहे को थोड़े से कार्बन के साथ मिलाने पर वह अधिक उपयोगी क्यों बन जाता है?

उत्तर : जब लोहे के साथ कार्बन मिला दिया जाता है तो वह फौलाद बन जाता है। साथ ही वह अधिक दृढ़ और मजबूत भी हो जाता है। इसके अतिरिक्त उसकी क्षमता में भी अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे समुद्री जहाज, वाहन तथा बांध बनाने में प्रयुक्त किया जाता है।

जिगर या यकृत के कृत्य

- मानव शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि यकृत है।
- इसका वजन लगभग 1.5 किलों से लेकर 2 किलो तक होता है।
- यकृत द्वारा ही पित्त स्रावित होता है। यह पित्त आँत में उपस्थित एंजाइमों की क्रिया को तीव्र कर देता है।
- यकृत प्रोटीन की अधिकतम मात्रा को कार्बोहाइड्रेट में भी बदल देता है और भोजन में वसा की कमी होती है तो यकृत कार्बोहाइड्रेट के कुछ भाग को वसा में भी बदल देता है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

दो बाल कविताएं : अंकुश्री

गुलाब

बड़ी–बड़ी है
इसकी पंखुड़ी,
हरी–मुलायम
इसकी अंखुड़ी।

बहुत रंग का
होता है यह,
कांटों पर भी
सोता है यह।

पीला, नीला,
लाल है रंग,
खुशी बांटना
इसका है ढंग।

कितने इसके
बने हैं गीत,
जो भी देखे
बन जाए मीत।

गेंदा

जस नाम रखा,
बस वैसा गुण,
ना कोई है
इसमें अवगुण।

कई रंग का
यह है होता,
अरूण–पीला
ज्यादा होता।

गंध इसकी
बहुत निराली,
दूर–दूर तक
जाने वाली।

दवा के रूप
में आए काम,
पूजा में भी,
यह भाए नाम।

आलेख : गोपाल जी गुप्त

पक्षियों की यात्राएं

यात्रा करना मनुष्यों के लिए मात्र मनोरंजन का साधन नहीं है अपितु यह ज्ञान–वृद्धि में भी सहायक होता है, किन्तु पक्षीवृन्द की यात्रा का मुख्य उद्देश्य उनके मूल स्थान में भयंकर शीत के प्रकोप से निजात पाना होता है। यही कारण है कि सुदूर उत्तर– पश्चिम में जब शीत का प्रकोप बढ़ जाता है तब वहाँ से भिन्न–भिन्न जातियों–प्रजातियों के पक्षी लम्बी यात्रा करके शरद् ऋतु में भारतवर्ष आते हैं, यहाँ वे प्रजनन (बच्चे जनते) करते हैं तथा बसंत–ग्रीष्म ऋतु में अपने नन्हें–नन्हें शावकों के साथ वापस अपने मूल स्थान को लौट जाते हैं। ये पक्षी आने–जाने में वक्त के इतने पाबन्द होते हैं कि उनके आगमन–प्रत्यागमन की ठीक–ठीक गणना या आंकलन की जा सकती है।

यह एक आश्चर्यजनक बात है कि किस प्रकार ये पक्षी अपने मूल स्थान से भारत में एक निश्चित स्थान पर बिना मार्ग भूले–भटके पहुँच जाते हैं? पक्षीविदों ने इस बात की जानकारी पाने में कई साल लगा दिये तब कहीं जाकर वे किसी नतीजे पर पहुँचे। पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार पक्षी अपने अन्दर मौजूद कम्पास तथा जैविक घड़ी (बायोलॉजिकल क्लॉक) की सहायता से सही मार्ग, स्थान तथा समय का ज्ञान कर लेते हैं। प्रख्यात पक्षीविद् डॉक्टर ज्योफ्रे मैथ्यूज ने पक्षियों में जैविक घड़ी होने की बात कही एवं जो उनको सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्रों की स्थिति का सही तथा सटीक ज्ञान कराती है और वे ठीक उसी स्थान पर पहुँच जाते हैं। इसे यों भी कहा जा सकता है कि प्रकृति उन्हें सही मार्ग तथा स्थान का ज्ञान कराने में सहायक होती है।

ब्रिटिश पक्षी शास्त्रियों एवं अनुसंधानकर्त्ताओं ने अपने अनुसंधानों से यह सिद्ध किया है कि पक्षी राजमार्गों, गलियों, बीथियों आदि का अनुसरण करते हैं तथा वे चौराहों पर गोलाकार चक्कर लगाते हुए उड़ान भरते हैं।

पक्षीविद् डॉक्टर गुस्ताव क्रोमर ने पक्षियों की इस क्षमता का परीक्षण भी किया, उन्होंने एक पिंजरे में कुछ पक्षियों को रखा तथा पिंजरे को एक ऐसे वृत्ताकार कमरे में रखा जहाँ की खिड़कियों से आसमान दिखता था। उन्होंने पाया कि वे पिंजरे को चाहे जिस दिशा में

रखे पक्षी केवल उसी दिशा में देख रहे थे जिधर से वे खुले आसमान में उड़ते थे। इसके बाद उन्होंने कमरे की सारी खिड़कियों को काले कपड़े के परदे से ढक दिया और बिजली की तेज रोशनी वाला बल्ब वहाँ इस तरह लटका दिया जिससे सूर्य की रोशनी का आभास हो। फिर वे अलग–अलग दिशाओं के बल्ब जलाने–बुझाने लगे तब उन्होंने अनुभव किया कि पक्षियों के उड़ान भरने की दिशा में, कृत्रिम सूर्य प्रकाश के अनुसार, परिवर्तन होने लगा। इससे वे इस नतीजे पर पहुँचे कि पक्षी सूर्य तथा नक्षत्रों की दिशाओं के आधार पर ही आवागमन का दिशा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वैसे अधिकांश पक्षी अपने स्थान परिवर्तन की ठीक–ठीक पहचान को स्मरण रखने के लिए न केवल जैविक घड़ी तथा कम्पास का ही आश्रय लेते हैं बल्कि वे सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों तथा अन्य प्राकृतिक उपादानों की भी सहायता लेते हैं।

कबूतरों के मामले में :

कबूतरों ने शताब्दियों पहले से ही डाकिये का काम करना शुरू कर दिया था। वे एक स्थान से पत्र ले जाकर दूसरे स्थान पर उसे देने तथा उसका उत्तर लेकर वापस लौटने का अहम् काम करते रहे हैं। इस तरह वे भी यात्रा करने में पटु होते हैं। उनकी यह विशेषता सचमुच हैरतंगेज हैं। इतिहास के पन्नों पर उनकी ये खूबी दर्ज है। कहा जाता है कि कबूतरों के माध्यम से गोपनीय सूचनाएं, पत्रों का आदान–प्रदान का काम मिस्र से प्रारम्भ हुआ। कबूतरों के मामलों में कहा जाता है कि वे अपने जाने–पहचाने स्थान पर प्राकृतिक स्थितियों तथा मनुष्यों द्वारा बनाए अनेक चिह्नों की सहायता से पहुँचते हैं।

कबूतरों के विषय में अनेक अनुसंधानकर्त्ताओं ने यह जानकारी लेने के लिए कि वे कैसे गन्तव्य का ज्ञान पा लेते हैं उनकी नासिका तन्त्रिकाएं तक निकाल लीं। ऐसा करने के बाद यह देखा गया कि कबूतर अपने गन्तव्य तक पहुँचने में असफल रहे और वे अपना मार्ग तक भूल भटक गए। बावजूद इसके यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि क्या कबूतर एक ही आकाशीय मार्ग का प्रयोग करते हैं? क्योंकि उनके शरीर में आँख–नाक के आस–पास दो आन्तरिक कम्पास होते हैं, जिससे वे धरती के चुम्बकीय स्थिति की जानकारी पाते हैं। ■

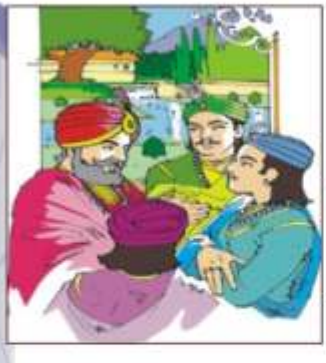

प्रेरक कहानी : अर्चना जैन

पैसे का उपयोग

एक बार एक राजा के दरबार में इस बात की चर्चा चल रही थी कि राजकोष का उपयोग किसके लिए किया जाए?

एक विचार यह था कि सैन्य शक्ति बढ़ाई जाए ताकि न केवल राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित हो बल्कि क्षेत्र विस्तार की योजना भी आगे बढ़े। इस पर जो खर्च पड़ेगा वह पराजित देशों से मिलने वाले राजस्व (कर) से पूरा हो सकेगा।

दूसरा विचार यह उभरकर सामने आया– राजकोष का उपयोग जनकल्याण के लिए होना चाहिए। प्रजा का स्तर उठाने में राजकोष खाली कर दिया जाए। सुखी, संतुष्ट, साहसी और संभावनाशील नागरिकों में से प्रत्येक एक दुर्ग होता है। उन्हें जीतना किसी शत्रु के लिए सम्भव नहीं। इस प्रकार युद्ध में क्षेत्र जीतने की अपेक्षा मैत्री का विस्तार कहीं अधिक लाभदायक है। उससे स्वेच्छा सहयोग और अपनत्व की ऐसी उपलब्धियां प्राप्त होती हैं, जिनके कारण छोटा देश भी चक्रवती स्तर का बन सकता है।

दोनों पक्षों के विचार–विमर्श चलते रहे, खूब गर्मागर्म बहस हुई, दोनों पक्षों ने जोरदार दलीले दीं।

अंतिम निर्णय राजा को करना था। सब उत्सुक थे कि वे क्या कहते हैं?

राजा ने कहा, ''युद्ध पीढ़ियों से लड़े जाते रहे हैं। उनके कड़वे, मीठे परिणाम भी स्मृतिपटल पर अंकित हैं। इस बार युद्ध के प्रयोजनों की उपेक्षा कर लोकमंगल की परिणति को परखा जाए और समस्त संपत्ति जनकल्याण की योजनाओं में खर्च कर दी जाए। कुछ लोगों को राजा का यह निर्णय अटपटा लगा, लेकिन राजा का आदेश था, वैसा ही किया गया। धीरे–धीरे प्रजाजन हर दृष्टि से सम्पन्न हो गये।

लघु कहानी : राधे लाल 'नवचक्र'

ग्वालिन की सूझ

एक थी ग्वालिन। वह रोज दूध बेचने के लिए बाजार जाती थी। उसके पास दूध के तीन छोटे–बड़े बर्तन थे। बड़े बर्तन में आठ किलोग्राम दूध समाता था, मंझोले में पांच और सबसे छोटे बर्तन में तीन किलो दूध के लिए जगह थी।

एक दिन वह तीनों बर्तन में कुछ न कुछ दूध लेकर बेचने के लिए घर से बाजार की तरफ निकली। रास्ते में एक व्यक्ति ने उससे एक किलोग्राम दूध मांगा। जब उसे दूध देने के लिए ग्वालिन ने दूध के बर्तनों को सिर से उतारा, तो उसे अपनी भूल महसूस हुई। वह अफसोस करती हुई बोली, "अरे, मैं तो आज अपना बाट लाना ही भूल गयी।" फिर उसने सारे दूध को बड़े बर्तन में डाल दिया तो उसे पता चला कि कुल आठ किलोग्राम दूध है क्योंकि बड़ा बर्तन दूध से पूरी तरह भर गया था। कुछ सोच–विचार कर वह व्यक्ति से बोली, "भैया, ठीक है, मैं अभी आपको एक किलोग्राम दूध देती हूँ।"

"कैसे देगी?" जब तुम्हारे पास बाट ही नहीं है?" व्यक्ति की उत्सुकता बढ़ी।

बालगीत : दिनेश 'दर्पण'

चाँद सितारे

दिन ढल जाता, संध्या आती,
संध्या ढलती सब तारे आते,
अंधियारा जब छा जाता है,
तब चमकते चाँद–सितारे।

गहन निशा जब छा जाती है,
सन्नाटे में रम जाती है,
सब प्राणी जब सो जाते हैं,
पहरा देते हैं चाँद–सितारे।

पहर सभी ढलने लगते हैं,
सर्द हवा सहने लगते हैं,
दर्द सहेजने वे लगते हैं,
टिमटिमाते हैं चाँद–सितारे।

ग्वालिन उसे अपने सभी बर्तनों के माप बताते हुए बोली, ''मेरे पास इस समय कुल आठ किलो दूध है। मैं इन्हीं बर्तनों को बाट मानकर आपको एक किलो दूध दे दूंगी।''

व्यक्ति को काफी अचरज हुआ। बोला, ''भला इन बर्तनों को बाट मानकर तू मुझे एक किलो दूध कैसे देगी?

''कहो तो, दूं।''

''हाँ, दो। देखूं तेरी बुद्धि।''

अब ग्वालिन ने झट बड़े बर्तन के दूध से तीन किलो वाले बर्तन को भर दिया। फिर तीन किलो वाले बर्तन का सारा दूध पांच किलो वाले बर्तन में डाल दिया। पुनः उसने वही क्रिया दोहरायी। इस बार तीन किलो वाले बर्तन में एक किलो दूध रह गया, जिसे उसने व्यक्ति के हाथ बेच दिया।

व्यक्ति घर लौटते हुए रास्ते भर ग्वालिन की बुद्धि की सराहना करता हुआ अघा नहीं रहा था।

प्रेरक–प्रसंग : सुरेश

घमण्डी मक्खी

एक जंगल में शेर रहता था। अचानक कहीं से मक्खी आकर शेर को तंग करने लगी। शेर गुस्से में आग–बबूला हो उठा। वह मक्खी कभी कान पर बैठती तो कभी नाक पर। शेर पंजा मारता तो मक्खी उड़ जाती पर कान जरा छिल जाता।

मक्खी उड़कर शेर की नाक पर बैठी तो उसने मक्खी को पकड़ने के लिए फिर पंजा मारा। मक्खी फिर उड़ गई, अबकी बार शेर की नाक छिल गई? मक्खी कभी शेर के माथे पर बैठती, कभी गाल पर तो कभी गर्दन पर।

शेर पंजा मारता जाता और खुद को घायल करता जाता। मक्खी तो उड़ जाती।

अन्त में शेर ऊब और थक गया। वह बोला– "मक्खी बहन अब छोड़ो; मैं हारा और तुम जीती।" बस मक्खी घमण्ड में चूर होकर उड़ती–उड़ती आगे बढ़ी। सामने से एक हाथी आ रहा था। मक्खी ने कहा– अरे हाथी मुझे प्रणाम करो, मैंने जंगल के राजा शेर को हराया है। इसलिए जंगल में अब मेरा राज चलेगा।

हाथी ने सोचा– इस पागल मक्खी से बहस करने में समय कौन बर्बाद करेगा। हाथी ने सूँड ऊपर उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया। सामने से आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा। लोमड़ी मंद–मंद मुस्कुराने लगी।

इतने में मक्खी ने लोमड़ी से कहा– अरे ओ लोमड़ी चल मुझे सलाम कर। मैंने जंगल के राजा शेर और हाथी को हरा दिया है?

लोमड़ी ने उसे प्रणाम किया।

फिर लोमड़ी धीरे से बोली–

प्रेरक–प्रसंग : नरेश

नेकी कर

एक काफिला सफ़र के दौरान सुरंग से गुजर रहा था। उनके पैरों में कंकरिया चुभी, कुछ लोगों ने इस ख्याल से कि किसी और को न चुभ जाये, नेकी की खातिर उठाकर जेब में रख ली। कुछ ने ज्यादा उठाई कुछ ने कम। जब अँधेरी सुरंग से बाहर आये तो देखा वो हीरे थे। जिन्होंने कम उठाये वो पछताए कि ज्यादा क्यों नहीं उठाए। जिन्होंने नहीं उठाए वो और पछताए। दुनिया में जिन्दगी की मिसाल इस अँधेरी सुरंग जैसी है और नेकी यहाँ कंकरियों की मानिंद हैं इस जिंदगी में जो नेकी की वो आखिर में हीरे की तरह कीमती होगी और इन्सान तरसेगा कि और क्यों ना की।

मैं "किसी से" बेहतर करुं
क्या फर्क पड़ता है..।
मैं "किसी का" बेहतर करुं
बहुत फर्क पड़ता है..!!

"धन्य हो मक्खी रानी धन्य हो। धन्य है आपका जीवन और धन्य हैं आपके माता–पिता। जिन्होंने आपको जन्म दिया। मक्खी–रानी वह देखो सामने जो मकड़ी दिखाई दे रही है न; वह आपको गाली दे रही थी। उसकी ज़रा खबर लो न।" यह सुनकर मक्खी गुस्से से लाल हो उठी।

मक्खी बोली– "उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते खत्म कर देती हूँ।"

यह कहते हुए मक्खी मकड़ी की तरफ झपटी और मकड़ी के जाल में फँस गई। ज्यों–ज्यों मक्खी जाले से छूटने की कोशिश करती त्यों–त्यों वह और भी अधिक फंसती गई। ... अंत में वह थक गई और निढाल हो गई। यह देखकर लोमड़ी मंद–मंद मुस्कुराती हुई वहाँ से चलती बनी। मक्खी को अपने घमण्ड का फल मिल गया था। इसलिए तो समझदार लोग कहते हैं कि घमण्ड मत करो। घमण्ड करने वाले का अन्त भी बुरा होता है।

प्रेरक आलेख : दिनेश दर्पण

दया के सागर न्यूटन

संसार का हर बड़ा व्यक्ति सदाचारी होता है। सदाचारी व्यक्ति कभी कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे किसी को भी ठेस पहुँचे। न्यूटन, संसार के एक बहुत बड़े वैज्ञानिक और गणितज्ञ थे। उन्होंने एक कुत्ता पाल रखा था। वे उस कुत्ते से बहुत प्यार करते थे। कुत्ता भी अपने मालिक से बहुत प्यार करता था। वह अपने मालिक पर 'जान छिड़कता' था। एक रात को न्यूटन महोदय कुछ लिख रहे थे। लिखने में वे ध्यानमग्न थे। उनकी एक हस्तलिखित पुस्तक की पाण्डुलिपि भी वहाँ पास ही मेज पर रखी हुई थी। कुत्ता भी मेज पर बैठा हुआ था और उसके सामने मेज पर एक ही मोमबत्ती जल रही थी।

अचानक ही लिखते–लिखते न्यूटन महोदय को कोई बात याद आ गई और वे कुछ समय के लिए कमरे से बाहर चले गये। उनके जाने के बाद कुत्ता अचानक हुई आहट से चौंककर हड़बड़ाते हुए भौंकते हुए उठा। इस उठा–पटक में मेज पर जल रही मोमबत्ती पास ही रखी हस्तलिखित पुस्तक की पाण्डुलिपि पर गिर पड़ी। मोमबत्ती की लौ से पुस्तक की पाण्डुलिपि के पन्नों में आग लग गई। थोड़ी ही देर में बहुमूल्य पुस्तक राख के ढेर में बदल गई।

न्यूटन को उस पुस्तक की पाण्डुलिपि को दूसरे ही दिन प्रेस में छापने के लिए भेजना था। जब वह कमरे में आये और पाण्डुलिपि को जलकर राख के ढेर के रूप में देखा तो कुछ देर के लिए तो वे हक्के–बक्के रह गये। फिर सामान्य होकर कुर्सी पर बैठकर लिखने लगे।

न्यूटन महोदय की जगह यदि कोई और होता तो अपनी बहुमूल्य पुस्तक की पाण्डुलिपि जल जाने पर कुत्ते को जान से मार देते परन्तु न्यूटन महोदय ने अपने कुत्ते को मारना पीटना तो दूर उसे डांटा तक नहीं। उनका बहुत बड़ा नुकसान हो गया था परन्तु सहृदय न्यूटन

सन्त की महानता

लघु कथा : राजेश चौधरी

पश्चिम भारत में तुकाराम नाम के एक सन्त हुए हैं। वे अत्यंत निर्धन थे। उनके पास एक छोटा–सा खेत था। एक बार उन्होंने उस खेत में गन्ने बोए। जब गन्ने तैयार हो गये तो एक दिन उन्होंने गन्नों को काटा और गठरी में बाँधकर अपने घर की ओर रवाना हुए।

रास्ते में कई बच्चे उनके पीछे पड़ गए और गन्ना माँगने लगे। उन्होंने सभी बच्चों को गन्ना बाँट दिया। उनके पास सिर्फ एक गन्ना बचा, जिसे लेकर वे घर लौटे। उनकी पत्नी का नाम रखुमाई था। वह बड़ी गुस्सैल और चिड़चिड़े स्वभाव की थी। जब रखुमाई ने देखा कि तुकाराम खेत से केवल एक गन्ना लेकर लौट रहे हैं, तो वह सारी बातें समझ गई। उसने 'आव देखा न ताव' तुकाराम से गन्ना छीन कर उन्हीं की पीठ पर जोर से दे मारा। पीठ पर पड़ते ही गन्नं के दो टुकड़े हो गए।

सन्त तुकाराम तो पूरे सन्त ही थे। क्रोधित होने के बदले वे हँसते हुए बोले– कितनी अच्छी हो तुम! हम दोनों के लिए गन्ने के दो टुकड़े मुझे करने पड़ते, पर यह काम तुमने मेरे बिना कहे ही कर दिया।

महोदय यह बात जानते थे कि मूक पशु ने अज्ञानता के कारण ही ऐसा किया है। उन्होंने मूक पीड़ा से पीड़ित अपने कुत्ते की आँख से पश्चाताप के आंसू गिरते हुए देखकर उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा।

सच है, क्षमाशील, नम्र और धैर्यपूर्वक व्यवहार न्यूटन जैसे महान व्यक्ति का ही हो सकता है। इसी सदाचार ने उन्हें संसार का सबसे बड़ा वैज्ञानिक और साथ ही साथ एक अच्छा इन्सान भी बनाया।

बाल कविता : मीरा सिंह 'मीरा'

जाड़े का मौसम

जाड़े का मौसम आया
सूरज का मन अलसाया,
लिहाफ तान कर सोएं हैं
देखो सात बजने को आया।

क्या उनको है नहीं पता
सर्दी सबको रही सता,
क्या किसी से अनबन हुई
या हुई हमसे कोई खता।

सूरज बाबा गुस्सा छोड़ो
लिहाफ से बाहर निकलो ना,
थोड़ी सी ही झलक दिखा दो
प्यार की उष्मा दे दो ना।

सूरज बाबा आंखे खोलो
बच्चों से हँसकर बोलो ना,
नन्हें–मुन्ने प्यारे बच्चो!
आओ किरणों से खेलो ना।

भैया से पूछो

– मुकेश कुमार (रामपुर)

प्रश्न : भैया जी! भक्ति और ज्ञान में क्या अन्तर है?

उत्तर : प्रभु की जानकारी कर उसकी आराधना करना ही भक्ति है, जबकि ज्ञान केवल दुनियावी एवं सांसारिक जानकारी है।

– आनन्द कुमार (दतिया)

प्रश्न : संसार में सबसे उत्तम वस्तु क्या है?

उत्तर : सदाचार अर्थात् सद्चरित्र।

– गुरदीप कौर (सबरी कलां)

प्रश्न : मुझे लिखने का बहुत शौक है। मेरे मन में बहुत सारे विचार आते हैं। पर मैं जब उन विचारों को लिखने बैठती हूँ तो लिख नहीं पाती। कृपया मार्गदर्शन करें?

उत्तर : मन में उठ रहे किसी भी भाव को पहले बिना संवारे ही लिख लें उसके एक घण्टे बाद अपने लिखे हुए लेख को दोबारा पढ़े तो स्वयं उस लेख को ठीक कर लेंगी। प्रारम्भ में ऐसा प्रयास करें, फिर किसी दूसरे व्यक्ति को उसे दिखा लें। धीरे–धीरे परिपक्वता आ जायेगी।

प्रश्न : मुझे गुस्सा बहुत आता है। गुस्से पर काबू पाने के लिए काफी तरीके अपनाती हूँ पर कुछ फर्क नहीं पड़ता।

उत्तर : (1) याद रखो! क्रोध हमेशा कमजोर व्यक्ति को ही आता है। अपनी कमजोरी को दूर करें ताकि गुस्सा हमेशा के लिए आना बन्द हो।

(2) गुस्सा तुरन्त दूर करने के लिए पहले प्रश्न में बताया गया लिखने का तरीका अपनायें। मन में उठ रहे भावों को कागज पर उतार दें। बस गुस्सा शान्त हो जायेगा। इसका अभ्यास करने से गुस्सा आयेगा ही नहीं।

– एकता (वडसा)

प्रश्न : सत्य कड़वा होता है और झूठ मीठा। ऐसा क्यों कहते हैं?

उत्तर : ऐसा नहीं है। सत्य उन्हें कड़वा लगता है जो झूठ और दिखावे के जाल में फँसे होते हैं। इसलिए उन्हें झूठ (दिखावा) मीठा अर्थात् लुभावना लगता है।

– चन्द्र प्रकाश कुकरेजा (वडसा)

प्रश्न : आदमी की बुद्धि नैसर्गिक देन है या कृत्रिमता से प्राप्त हो सकती है। क्या मनुष्य स्वयं भी बुद्धि का विकास कर सकता है? कैसे?

उत्तर : बुद्धि तो ईश्वरीय देन है परन्तु यह संगत के प्रभाव से विकसित या कुंठित हो जाती है।

– अमित (वडसा)

प्रश्न : भैया जी! बच्चे का मन कोमल होता है उन्हें सत्संग, सेवा, सुमिरण से कैसे जोड़ा जाए?

उत्तर : उसके सामने स्वयं ये सब करके।

प्रश्न : इन्सान की इज्जत किस चीज से बढ़ती है?

उत्तर : सद्चरित्र से।

प्रश्न : अगर इन्सान के मन में बुरे विचार आयें तो उसे क्या करना चाहिये?

उत्तर : उसे सत्संग (सत्पुरुषों का संग) करना चाहिए और अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

– सुनीता खुराना (हिसार)

प्रश्न : चिन्ता और चिन्तन में क्या अन्तर है?

उत्तर : चिन्ता नकारात्मक सोच है और चिन्तन सकारात्मक विचार।

– पिंकी (फैजाबाद)

प्रश्न : दुनिया में सबसे सस्ती चीज क्या होनी चाहिए?

उत्तर : खुशी

कहानी : सीताराम गुप्ता

चिड़िया का उपहार

एक राजा था। उसने एक खूबसूरत महल बनवाया। संगमरमर से बने महल में सुंदर नक्काशी की गई थी। राजा के सोने का कमरा भी बहुत बड़ा और सुन्दर था। इस कमरे की खिड़कियों के पल्लों में रंग–बिरंगे कीमती शीशे लगे हुए थे। एक दिन सुबह–सुबह ठक–ठक की तेज आवाज से राजा की नींद खुल गई। राजा ने अपने सेवकों से कहा कि पता लगाओ कि ये आवाज कहाँ से आ रही है। सेवकों ने बाहर जाकर देखा और आकर राजा को बताया कि आपके शयनकक्ष की खिड़की के बाहर एक चिड़िया बैठी है और वही अपनी चोंच से शीशे पर ठक–ठक की आवाज कर रही है।

खिड़की के शीशे ऐसे थे कि अंदर से बाहर की चीजें तो दिखलाई पड़ती थीं लेकिन बाहर से अन्दर की चीजें नहीं दिखाई देती थीं। राजा ने खिड़की के शीशे से बाहर झाँक कर देखा तो पाया कि एक खूबसरूत–सी अजनबी चिड़िया खिड़की पर बैठी अपनी चोंच से खिड़की के शीशे पर प्रहार कर रही है। राजा ने अपने शयनकक्ष की खिड़की खोली तो चिड़िया फौरन उड़कर कमरे में अंदर आ गई। चिड़िया इतनी सुंदर थी कि राजा उसे मंत्रमुग्ध होकर देखता रहा। उसके पंख अत्यंत रंग–बिरंगे, कोमल और सुन्दर थे। उसकी आँखें आकर्षक और चमकीली थीं। थोड़ी देर कमरे में बैठने के बाद वह उड़कर बाहर चली

गई और महल के पास लगे बगीचे में कहीं गुम हो गई।

अगले दिन सुबह फिर राजा को ठक–ठक की आवाज सुनाई दी। राजा ने फौरन अपने शयनकक्ष की खिड़की खोल दी और चिड़िया फौरन उड़कर फिर कमरे के अंदर आ गई। यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन राजा ने चिड़िया से कहा– ''प्यारी चिड़िया तुम हमेशा के लिए क्यों नहीं मेरे महल में रूक जाती? यहाँ तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी।''

''जानती हूँ यहाँ मुझे किसी चीज की कमी नहीं होगी पर मैं हमेशा के लिए कैसे रूक सकती हूँ? मैं तो एक प्रवासी पक्षी हूँ। हर साल सर्दियों में जब हमारे देश में बर्फ पड़ने लगती है तो मैं आपके देश में चली आती हूँ। यहाँ की सर्दी मुझे बहुत अच्छी लगती है। यहाँ जब गर्मी शुरू हो जाती है तो मैं अपने देश चली जाती हूँ। ऐसे में मैं हमेशा के लिए कैसे रूक सकती हूँ।''

राजा ने कहा, ''हमेशा के लिए न सही लेकिन जब तक तुम हमारे देश में रहोगी मेरे महल में मेरे पास ही रहोगी।'' चिड़िया राजा के पास महल में रहने लगी। राजा चिड़िया को बहुत चाहने लगा। वह उसकी देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ता था। चिड़िया भी राजा को देखे बिना बेचैन हो जाती। समय गुजरते देर नहीं लगती। सर्दी का मौसम

कब और कैसे बीत गया कुछ पता ही नहीं चला। गर्मी का मौसम शुरू हो गया तो चिड़िया को कुछ–कुछ बेचैनी–सी होने लगी। उसने राजा से कहा कि अब मेरा यहाँ रहना मुश्किल है इसलिए मुझे मेरे देश जाने की आज्ञा दीजिए।

राजा चिड़िया के जाने की बात सुनकर उदास हो गया। उसने चिड़िया को जाने की आज्ञा दे दी लेकिन एक शर्त भी रख दी। शर्त ये कि अगले साल सर्दियों में भी चिड़िया लौटकर यहीं महल में आकर रहेगी। चिड़िया अगले साल लौटने का वादा कर अपने देश के लिए उड़ चली। चिड़िया को भी राजा से बिछुड़ने का कम दुःख नहीं था। ऐसा अच्छा प्रेम करने वाला व्यक्ति उसने अपने जीवन में पहली बार देखा था। उठते–बैठते वह राजा के बारे में ही सोचती रहती। वह खुद राजा से मिलने के लिए व्याकुल रहने लगी। धीरे–धीरे मौसम बदलने लगा। बर्फ पड़ने लगी और चिड़िया के लिए अपने ही देश में रहना मुश्किल हो गया।

अब चिड़िया को हजारों किलोमीटर उड़कर फिर दूसरे देश जाना था लेकिन फिर भी वह खुश थी क्योंकि उसे राजा के पास वापस लौटने का वादा जो निभाना था। साथ ही साथ वह राजा के लिए कोई

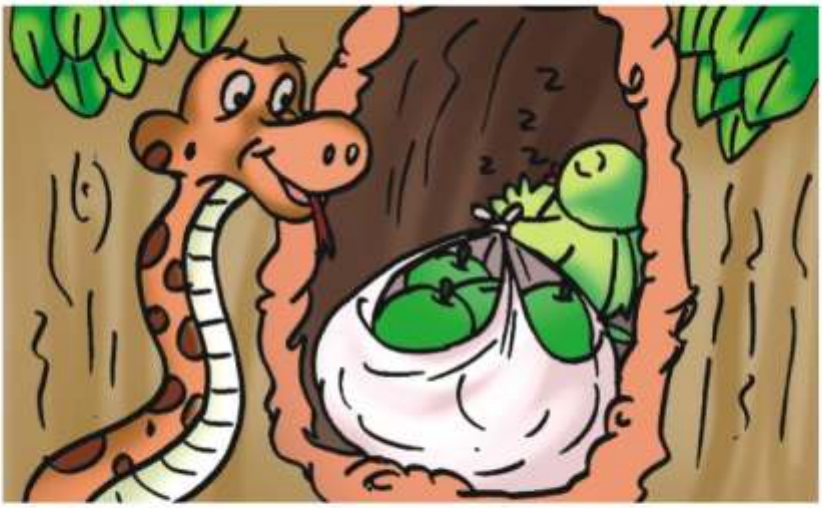

उपहार भी ले जाना चाहती थी। ऐसा उपहार जिसे देखकर राजा प्रसन्न हो जाए। चिड़िया के देश में ऐसे फल पैदा होते थे जिससे खाने वाले का काया–कल्प हो जाता था। काया–कल्प का अर्थ है शरीर की शुद्धि होकर बीमारियों से मुक्ति। चिड़िया ने सोचा राजा के लिए कल्पफल ही उत्तम उपहार रहेगा। उसने कुछ अच्छे कल्पफल एकत्रित किये और राजा के देश की ओर उड़ चली। वह दिन भर उड़ती रहती और रात को आराम करने के लिए किसी पेड़ पर रूक जाती।

एक दिन उसने अपने कल्पफल एक पेड़ की कोटर में रखे और उसी पेड़ की एक टहनी पर आराम करने लगी। उसी पेड़ के एक दूसरे कोटर में एक विषधर सर्प रहता था। वह साँप अनेक असाध्य रोगों से पीड़ित था। साँप ने जैसे ही चिड़िया द्वारा रखे हुए कल्पफल देखे खुशी से उसकी बाँछे खिल उठीं। चिड़िया के सो जाने पर साँप ने सब कल्पफलों में से थोड़ा–थोड़ा हिस्सा काटकर खा लिया ताकि चिड़िया को भी पता न चले और उसका उपचार भी हो जाए। कल्पफल खाते ही साँप न केवल सब रोगों से मुक्त हो गया अपितु उसके शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार होने लगा।

अगले दिन सुबह उठने पर चिड़िया ने कोटर में से कल्पफल निकाले और आगे की उड़ान पर चल दी। चिड़िया इस बात से बेखबर थी कि एक विषधर ने इन कल्पफलों को थोड़ा–थोड़ा काटकर खा लिया है और इससे फलों पर काटने के निशान पड़ गए हैं। इस बात से अनजान चिड़िया खुशी–खुशी राजा के महल में पहुँची और राजा को अपने साथ लाए हुए उपहार दिए। उपहारों की विशेषता के बारे में जानकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह चिड़िया द्वारा उपहार में लाए गए कल्पफलों को खाकर उनका प्रभाव जानने के लिए बेचैन हो उठा।

जैसे ही राजा ने एक कल्पफल उठाकर मुँह की तरफ ले जाने की कोशिश की उसके मंत्री ने कहा, ''ठहरो! महाराज ठहरो!! इन फलों को खाने से पहले क्यों न इनकी जाँच कर ली जाए? कहीं ऐसा न हो किसी ने इनमें विष मिला दिया हो?''

पास ही राजा का पालतू कुत्ता बैठा था। मंत्री ने एक फल कुत्ते की ओर उछाल दिया। कुत्ते ने जैसे ही फल खाया फौरन उसके प्राण–पखेरू उड़ गए। यह देखकर राजा को बहुत दुःख हुआ। उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि उसकी प्यारी चिड़िया उसके साथ ऐसा धोखा करेगी। उसने चिड़िया को मौत के घाट उतारने का फरमान जारी कर दिया और दुःखी मन से अपने कमरे में चला गया।

थोड़ी देर पहले जहाँ प्रसन्नता और उत्साह का वातावरण था वहीं अब खिन्नता और उदासी छाई हुई थी। रंग–बिरंगे, कोमल और सुन्दर पंखों वाली चिड़िया का रक्त–रंजित शव संगमरमर के फर्श पर पड़ा था। चारों तरफ चिड़िया के विश्वासघात की ही चर्चा हो रही थी। राजा के कर्मचारियों ने चिड़िया का शव और उसके द्वारा लाए गए सारे कल्पफल महल के उद्यान के एक कोने में एक साथ दबा दिये। समय हर चीज को भुला देता है। धीरे–धीरे लोग चिड़िया और उसके विश्वासघात को भी भूल गए। राजा भी अपने राज–काज में व्यस्त हो

गया। चिड़िया और उससे जुड़ी कहानियों के चर्चे लोगों की जबान से ऐसे गायब हो गये थे जैसे गधे के सिर से सींग।

जिस स्थान पर चिड़िया और उसके द्वारा लाए गए कल्पफलों को दफन किया गया था उसी स्थान पर एक दिन लोगों ने देखा कि वहाँ कुछ पेड़ उग आए हैं। ऐसे पेड़ लोगों ने पहली बार देखे थे। कुछ लोगों ने कहा कि ये साधारण पेड़ नहीं बल्कि इनमें चिड़िया की आत्मा है। चिड़िया ने राजा से बदला लेने के लिए पेड़ों के रूप में जन्म लिया है। धीरे–धीरे पेड़ बड़े होने लगे। कालांतर में पेड़ों पर सुंदर–सुंदर फूल खिल उठे और कुछ समय के बाद पेड़ फलों से लद गए। राजकर्मचारियों ने देखा कि ये बिल्कुल वैसे ही फल थे जैसे चिड़िया राजा के लिए उपहार में लाई थी। लोगों ने जहरीले फलों के डर से उस तरफ जाना ही छोड़ दिया।

क्योंकि राजा चिड़िया से बेपनाह मुहब्बत करता था इसलिए उसने इन पेड़ों को काटने नहीं दिया लेकिन ये सोचकर कि कहीं लोग गलती से ये फल खाकर मौत का ग्रास न बन जाएं हर साल इन पेड़ों पर लगने वाले फलों को नष्ट कर दिया जाता। समय ने एक बार फिर करवट बदली। राजा गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। बड़े–बड़े वैद्य–हकीम आए पर राजा की बीमारी को न पकड़ पाए। उपचार में कोई कसर नहीं रख छोड़ी गई लेकिन 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की' वाली स्थिति हो गई थी। राजा का बदन सूखकर कांटा हो गया था। न उसे भूख लगती थी न प्यास। वह निराश हो चुका था। उसे अक्सर चिड़िया की भी याद आने लगी थी।

गहन निराशा के क्षणों में एक दिन राजा ने अपने जीवन का अन्त करने का ही फैसला कर डाला। वह सीधे उन कल्पफलों के वृक्षों के पास गया। पेड़ों पर लगे रसीले फलों को देखकर उसकी मरने की इच्छा बलवती हो उठी। उसे चिड़िया की भी बहुत याद आई। उसने मन ही मन कहा, "प्यारी चिड़िया तुम्हारा उपकार मेरा काया–कल्प तो नहीं कर पाया लेकिन संभव है मुझे पुनर्जन्म ही दे दे।" इतना कहकर राजा

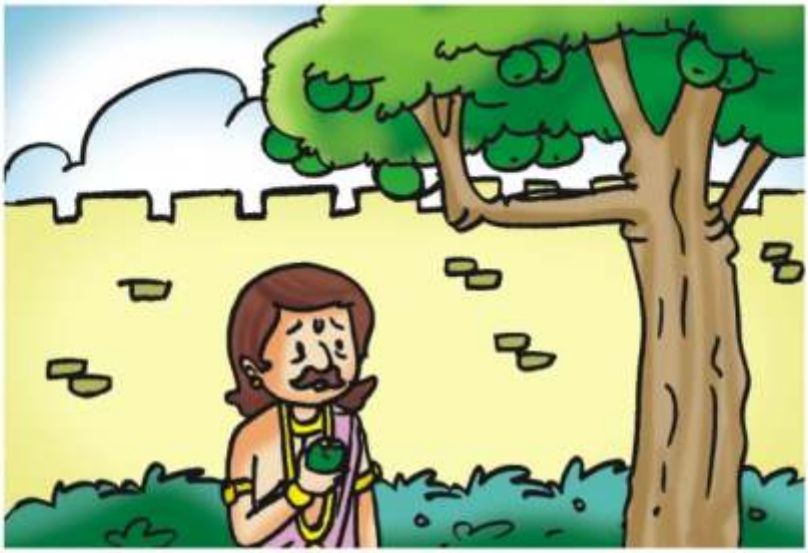

ने एक पेड़ से कुछ फल तोड़े और उन्हें खा गया। फल खाकर राजा को बड़ी हैरानी हुई क्योंकि ये फल अत्यंत मधुर और स्वादिष्ट थे लेकिन इससे भी ज्यादा हैरानी राजा को तब हुई जब राजा को पता चला कि उसकी सारी बीमारियां एकदम गायब हो गई हैं।

''मुझसे भयंकर भूल हो गई है'', राजा ने अपने मन में कहा। ''चिड़िया सचमुच मेरे लिए एक अनुपम उपहार लाई थी। वे कल्पफल ही थे लेकिन किसी जहरीले जानवर के काटने से वे फल विषाक्त हो गए थे। इसमें चिड़िया का कोई दोष नहीं था फिर भी मैंने उसे मृत्यु–दण्ड दे दिया। जिस चिड़िया को मैने मौत दी उसी की वजह से मुझे रोगों से मुक्ति और आरोग्य की प्राप्ति हुई'', यह कहकर राजा फूट–फूटकर रोने लगा लेकिन अब पछताना बेकार था। तभी तो कहा गया है कि हर निर्णय खूब–समझकर ही लेना चाहिए।

यह भी कहा गया है– शुभस्य शीघ्रम, अशुभस्य कालहरणम अर्थात् शुभ कार्य में देर नहीं करनी चाहिए और अशुभ कार्य या निर्णय लेने में पर्याप्त समय ले लेना चाहिए। राजा अशुभ निर्णय लेने में जल्दबाजी करके धोखा खा चुका था लेकिन अब शुभ कार्य में देर नहीं करना चाहता था। राजा ने उसी समय एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। उसने पूरे राज्य में जीव–जन्तुओं को मारने और पेड़–पौधों को काटने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। अपना राज्य एक योग्य उत्तराधिकारी को सौंप कर राजा स्वयं जीव–जंतुओं और पेड़–पौधों के संरक्षण के कामों में लग गया।

बाल कविता : डॉ. तारा निगम सूरज

सूरज

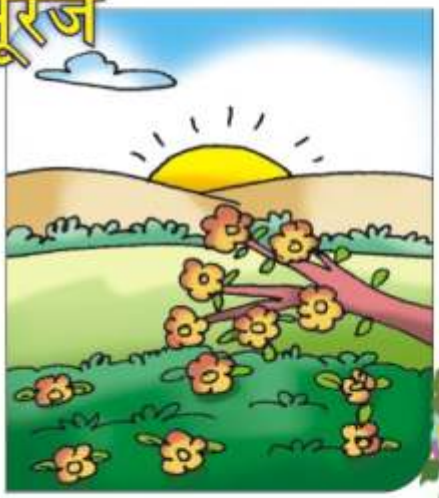

भोर हुये सूरज आयेगा
सारे जग को चमकायेगा।

सोता बच्चा जग जायेगा,
वो शाला पढ़ने जाएगा।

फूल चमन में खिल जायेगा,
तब भौंरा गुनगुन गायेगा।

जो सोता ही रह जायेगा,
वो फिर पीछे पछतायेगा।

शिशु गीत : डॉ. हरीश निगम

काम नेक हो

एक–एक दो,
काम नेक हो।

दो–दो चार,
हँस तो यार!

तीन–तीन छः
झूठ नहीं कह!

चार–चार आठ,
रोज पढ़ो पाठ!

पांच–पांच दस,
गीत खतम बस!

जंगल जीवन (जानकारी) : कमल सोगानी

काली रात के जंगली लुटेरे

दोस्तो! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि हमें जंगल का नज़ारा कितना अच्छा दिखाई देता है? हरे भरे पेड़ पौधे तरह–तरह के पशु–पक्षी और कीट–पतंगे, इसके अलावा कई तरह के रेंगने वाले जीव भी दिखाई देते हैं। एक तरह से यह खुला–खुला जंगल, इनका घर होता है जिसमें ये अपनी इच्छानुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं, लेकिन इस जंगल में इनकी जान को कई खतरे भी होते हैं, जान बचाने के लिए ये बड़े संघर्ष भी करते हैं। कभी मौत के मुंह में जाते हैं तो कभी चकमा देकर निकल भी आते हैं, खैर ...

जंगल में दो तरह के प्राणी होते हैं, एक शाकाहारी तो दूसरे मांसाहारी। शाकाहारी तो दिन में ही अपने हिसाब से अपना भोजन ढूंढ लेते हैं, किन्तु मांसाहारी जीव रात्रि में ही अपने भोजन की तलाश में निकलते हैं। रात के घोर अंधकार में भी कुछ मांसाहारी जीव तो दूर–दूर तक सब कुछ साफ–साफ देख लेते हैं। इसी कारण उन्हें विदित हो जाता है कि उनका शिकार कहाँ छिपा हुआ है, फिर वे दुबककर उसे दबोच कर अपना भोजन बना लेते हैं।

चीता, शेर, सियार, जंगली कुत्ते, बिल्ली और सांप जैसे प्राणियों को तो रात्रि में ही शिकार करने में आनन्द आता है। ये रात्रिचर जीव अपना पेट भरने के उपरांत आराम से नींद निकालते हैं, हाँ, नींद के साथ ही इनके पेट का भोजन भी पचता रहता है।

इन रात्रिचर जीवों की आंखों में ऐसी क्या खासियत होती है जो ये रात्रि में भी आसानी से देख लेते हैं? आओ, जरा यह भी जान लें।

दरअसल इन प्राणियों की आँखों में ''कोरोएड'' में ''रेटिना'' के पीछे की ओर संयोजी उत्तक पर उक्तवर्णक की एक पूरी परत होती है। इस मुआनिन वर्ण की परत में प्रकाश का परावर्तन करने या लौटाने की

प्रेरक–प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

नींव का पत्थर

स्वभाव से लाल बहादुर शास्त्री हँसमुख और विनोदप्रिय थे। मगर जब वह लोक सेवा मंडल के सदस्य बने तो उनका संकोच बढ़ गया।

अखबारों में अपना नाम छपवाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। लोग उनकी सराहना करे, यह भी वह नहीं चाहते थे। एक दिन किसी ने उनसे सवाल कर ही दिया, "अखबारों में अपना नाम छपवाने से आपको ऐतराज क्यों है?"

"दरअसल मैं लाला लाजपत राय जी द्वारा दी गई दीक्षा को अमल में ला रहा हूँ।"

"मतलब?"

"लोक सेवा मण्डल के कार्यों की दीक्षा देते समय उन्होंने मुझसे स्पष्ट कहा था – 'लाल बहादुर, जानते हो, दो किस्म के पत्थर लगे हैं, ताजमहल में। एक बढ़िया संगमरमर है जिसे सारा जहान देखता है। उसके अद्भुत सौंदर्य की खूब बड़ाई भी करता है। दूसरे किस्म का पत्थर ताजमहल की नींव में लगा है। मालूम है वे पत्थर हमेशा अंधेरे में पड़े रहते हैं। किसी की निगाह उन पर नहीं जाती। उनकी सराहना भी कोई नहीं करता। मगर ताजमहल उन्हीं पर टिका खड़ा है। और मैं नींव का पत्थर बना रहना चाहता हूँ।" शास्त्री जी ने सच्चाई बयान की।

अद्भुत क्षमता होती है, जब इस पर हल्का सा भी प्रकाश पड़ता है तो प्रकाश को रेटिना पर परावर्तित कर देते हैं। इसी कारण रात्रिचर जीव रात्रि के घोर अन्धकार में भी अपना शिकार आसानी से ढूंढ लेते हैं।

इसी तरह परिन्दों की दुनिया में उल्लू और चमगादड़ भी रात्रि में अपना शिकार, अपनी आंखों की कुदरती विशेषताओं के कारण ढूंढ लेते हैं, इनकी आंखें भी रात के घने अंधेरे में दूर–दूर तक बहुत कुछ तलाश लेती हैं। यह बात अलग है कि जंगली चूहों का कभी पेट नहीं भरता, ये रात–दिन जो भी खाने की चीजें देखते हैं, उसे कुतरते ही रहते हैं।

पढ़ो और हँसो

मां : राजू, तुमने छोटू को क्यों पीटा?
राजू : वह मेरी बात का जवाब नहीं दे रहा था।
मां : उसे अभी बोलना नहीं आता।
राजू : तो उसे बोलना चाहिए था कि उसे बोलना नहीं आता।

ग्राहक : यह चाय इतनी ठंडी क्यों है?
वेटर : साहब! यह दार्जिलिंग की चाय है।

– सोनी निरंकारी (खलीलावाद)

नौकर : (मालिक से) साहब! आपके जिगरी दोस्त का फोन आया है।
मालिक : तुझे कैसे मालूम कि वह मेरा जिगरी दोस्त है?
नौकर : वे कह रहे थे कि मूर्ख कहाँ है?

अर्पिता : (मम्मी से) मैं कहाँ से मिली थी?
मम्मी : बेटे, हम तुम्हें उत्तम नगर के बाजार से लाए थे।
अर्पिता : जरूर वहाँ 'सेल' लगी होगी।
मम्मी : तुम्हें कैसे पता चला?
अर्पिता : अपनी उंगलियां देख कर। सब अलग–अलग साइज की हैं। 'सेल' में ऐसा ही माल मिलता है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

कई चिंटियां तालाब में तैर रही थीं कि अचानक एक हाथी तालाब में कूद गया। सभी चीटियां शोर मचाते हुए तालाब से बाहर आ गई। एक चींटी हाथी की पीठ पर चढ़ गई। अब बाहर खड़ी सभी चीटियां जोर–जोर से चिल्ला–चिल्लाकर उस चींटी से कहने लगीं – डूबो डूबो कर मार डाल .....

– सुनील बलवानी (हिंगणघाट)

पिताजी : (पुत्र से) आज का प्रश्न–पत्र कैसा था?
पुत्र : पापा, गुलाबी रंग का था।

डॉक्टर : (मरीज से) गहरी सांस लो और तीन बार सात बोलो।
मरीज : (गहरी सांस लेकर) इक्कीस।– आजाद पी. थाक (बड़ौदा)

एक अपराधी को फाँसी पर लटकाने से पहले जेलर ने उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो अपराधी बोला–मुझे तरबूज खाना है।
जेलर : वो अभी नहीं मिलेगें। वह तो 6 महीने बाद मिलेंगे।
अपराधी : तो मैं 6 महीने तक इन्तजार कर लूंगा।

लाली बारिश में सड़क पर घूम रही थी। घूमते–घूमते उसका पैर रपट गया और वह सड़क पर गिर पड़ी। तभी ऊपर से बिजली कड़की तो लाली बोली – वाह भगवान! पहले तो गिराते हो फिर फोटो खींचते हो।

लाली : (मोना से) जरा ये तार पकड़ना।
मोना : (झटका लगने पर) लाली इसमें तो करण्ट है।
लाली : ठीक है मोना मुझे यही मालूम करना था।

एक चींटी तेजी से दौड़ती हुई अस्पताल की ओर जा रही थी। दूसरी चींटी ने पूछा – बहन! इतनी तेजी से कहाँ भागी जा रही हो?
पहली चींटी बोली –हाथी दादा का 'एक्सीडेण्ट' हो गया है उसे खून की जरूरत है। खून देने जा रही हूँ। – प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

कई दिनों से पत्नी का इलाज करा रहे एक व्यक्ति ने 'लेडी डॉक्टर' से कहा – इनकी बीमारी अब मेरा 'सर–दर्द' बनती जा रही है।
इस पर लेडी डॉक्टर बोली – सर–दर्द के लिए मेरे पति से मिलिए, मैं सिर्फ स्त्री रोग विशेषज्ञ हूँ। –गुरमीत सिंह टुटेजा (इन्दौर)

रवि : तुम्हारे कुत्ते ने हमारी मुर्गी खा ली है।
दीपू : यह बताकर आपने अच्छा किया है आज हम उसे खाना नहीं देंगे। –पिकी, फैजाबाद

नवम्बर अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम : शाईना निहार — आयु 10 वर्ष
टी–2, 171 जुगिआल
जिला : पठानकोट (पंजाब)

द्वितीय : जगरुप सिंह पाल — आयु 11 वर्ष
म.नं. 82, ग्राम : अधोया
जिला : अम्बाला (हरियाणा)

तृतीय : ऋशांक खुरानियां — आयु 12 वर्ष
281, तलाई बाजार
कैथल (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

याशी सक्सेना (हरदोई), एकता (आगरा), सुमित–काटल (न्यू ए.पी. कालोनी, दिल्ली कैंट), पंकज कुमार (अकौना), मोहित कुमार (कालका जी, दिल्ली), विनम्रता (शक्ति नगर, दिल्ली), निष्ठा छाबड़ा (राजा पार्क, जयपुर), सोनाक्षी (टोहाना), मेधा रानी (कैलाचक), प्रथम (इंदिरा पुरी, पटियाला), हार्दिक (सोरांव, इलाहाबाद), चिंकी (कलन्दर चौक, पानीपत), मोहित कुमार (गोविन्दपुरी, दिल्ली), अनुराग कुमार (गौशाला, रामगढ़ कैण्ट)

जनवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 जनवरी तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतियोगियों के नाम प्रकाशित किये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के मार्च अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेटबैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बाल कविता : विद्या प्रकाश

नया साल

नया साल है, नयी बात है, आओ खेलें धूम मचायें।
डाल डाल पर डोल डोल कर तितली जैसा मन मुस्कायें।।

पूरब दिशा में तम्बई सूरज
सोने की थाल सा,

गाँव–गाँव में सुगन्ध फैले
गंवई गमकीले गुलाब का।

नई आस है, नया उल्लास है, मन मगन मौज मनायें।
नया साल है, नयी बात है, आओ खेलें धूम मचाये।।

डार डार पर भोर की लाली
डगर डगर पर किरन किरन,
बीत गयी है रजनी काली
सन सनासन पवन पवन।

लहर लहर पर, डगर डगर पर नवसंगीत हम रच जायें।
नया साल है, नयी बात है, आओ खेलें धूम मचायें।।

प्रेरक–प्रसंग : संकलन : अर्जुन क्वात्रा

आत्मविश्वास

–अरे, राजेन्द्र परीक्षाफल घोषित हो गया, परन्तु तुम्हारा नाम नहीं है।

–असम्भव, ऐसा हो ही नहीं सकता।– ऐसा कहकर वह छात्र प्राचार्य के पास गया और आत्मविश्वास के साथ बोला– श्रीमान, मेरा नाम परीक्षाफल में अंकित नहीं हुआ है।

–तो तुम फेल हो गए होगे– प्राचार्य ने कहा।

"असम्भव, ऐसा हो ही नहीं सकता, मैं अवश्यमेव उत्तीर्ण हुआ हूँ।"

"अगर तुम उत्तीर्ण होते तो तुम्हारा नाम परीक्षाफल में अवश्य होता। जाओ व्यर्थ में मेरा समय मत खराब करो।"

"परन्तु श्रीमान ..."

"बहुत देर हो गयी है" प्राचार्य उस छात्र पर बिगड़े– अब अगर कुछ कहा तो जुर्माना होगा।

"मेरे फेल होने का कोई कारण ही नहीं। मैं अवश्य उत्तीर्ण हुआ हूँ, इस तथ्य में किसी प्रकार का सन्देह नहीं।"

"पांच रुपये जुर्माना किया जाता है।"

"श्रीमान, जुर्माना चाहे कितना भी हो, मेरे सभी परीक्षा–पत्र बहुत अच्छे हुए हैं। मैं फेल हो ही नहीं सकता। मैं अवश्य उत्तीर्ण हुआ हूँ, आपके परीक्षाफल में कहीं कोई गलती हुई है।"

बातों–बातों में जुर्माना पचास रुपये तक पहुँच गया। परन्तु छात्र अपनी बात पर अडिग रहा। इतने में प्राचार्य के कमरे में हेड क्लर्क ने प्रवेश किया, उसके हाथ में परीक्षाफल की मूल प्रति थी और बोले– श्रीमान, अनर्थ हो गया। एक छात्र जिसके सर्वाधिक अंक हैं। उसका नाम अलग से होने के कारण परीक्षाफल में अंकित होने से रह गया है।

–कौन है वह छात्र?

–राजेन्द्र प्रसाद...

–श्रीमान मैं कहता था न कि ...

प्राचार्य अपनी कुर्सी से उठे और राजेन्द्र को गले लगाकर बोले– "धन्य है तुम्हारा आत्मविश्वास, तुम अवश्य ही देश का नाम रोशन करोगे।"

बच्चों, जानते हो वह आत्मविश्वासी छात्र कौन था? वह था भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

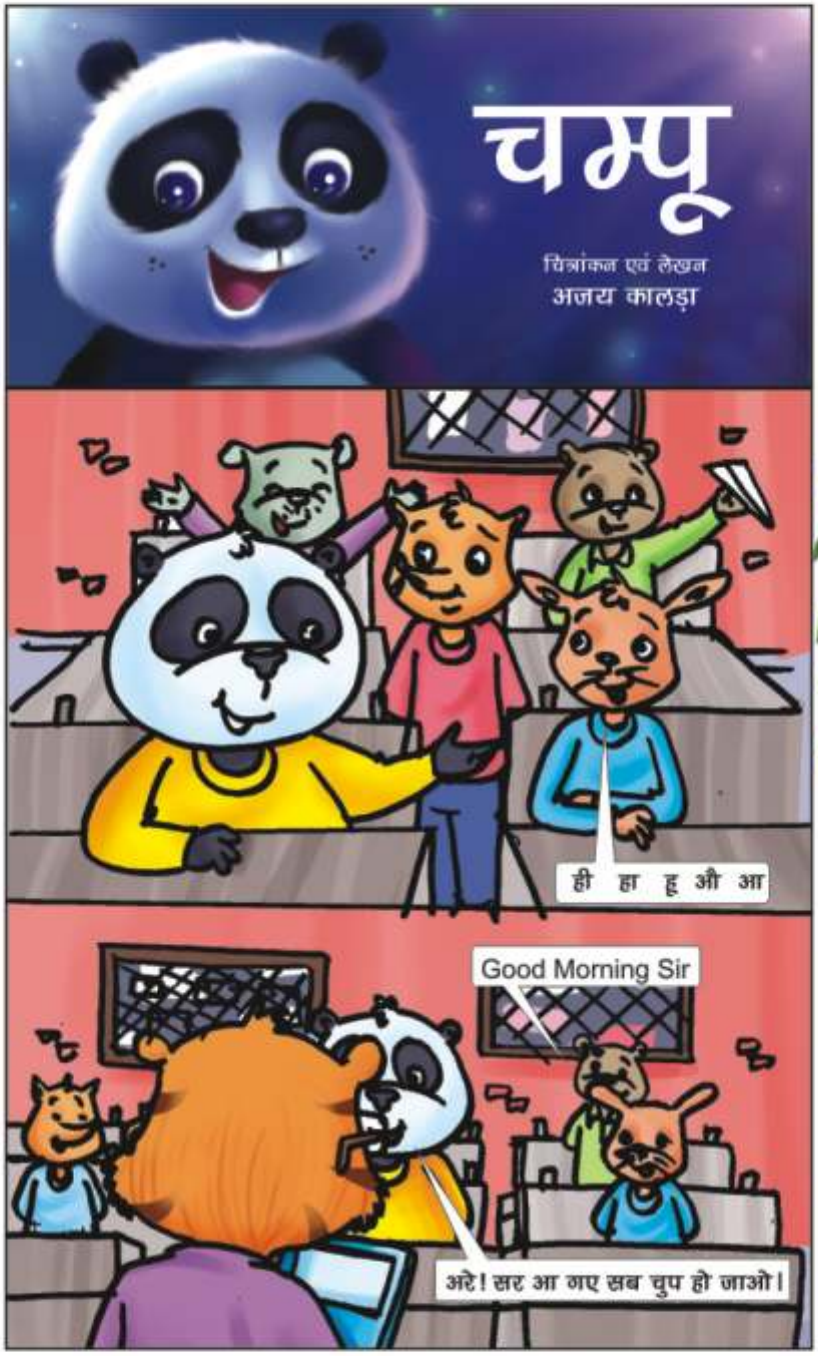
चम्पू
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
ही हा हू औ आ
Good Morning Sir
अरे! सर आ गए सब चुप हो जाओ।

Good Morning बच्चो!
Sit down Please
बच्चों तुम्हारे हिसाब से इस गिलास का वज़न कितना होगा?
50gm
100gm
150gm
जब तक मैं इसका वज़न न कर लूँ मुझे इसका सही वज़न नहीं पता चलेगा पर मेरा सवाल यह है कि यदि मै इसे थोड़ी देर तक उठाए रहूँ तो क्या होगा?
कुछ नहीं।

अच्छा! मै ऐसे ही घंटों तक उठाए रहूँ तो क्या होगा?
आपका हाथ दर्द होने लगेगा।
आपका हाथ सुन्न हो सकता है, आपकी मांसपेशियों में भी भारी तनाव आ सकता है, लकवा मार सकता है और पक्का आपको hospital जाना पड़ सकता है।
हा हा
हा हा
हा हा
तुम सही हो, अच्छा अगर मै इसे इसी तरह पूरे दिन उठाए रहूँ तो क्या होगा?
बहुत अच्छे चम्पू पर इस दौरान गिलास का वज़न बदला?
तब भला हाथ के दर्द और मांसपेशियो में तनाव क्यों आया?
"नहीं"

अरे! ये तो हमने सोचा ही नहीं।
तो अब दर्द से निजात पाने के लिए मै क्या करूँ?
"बिल्कुल सही" बच्चों ठीक उसी तरह हमारी जिंदगी में भी कुछ ऐसी ही Problems होती है। इन्हें कुछ देर तक अपने दिमाग में रखिए तो लगेगा की सब कुछ ठीक हो उनके बारे में ज्यादा देर सोचिए आपको पीड़ा होने लगेगी और इन्हें और भी देर तक अपने दिमाग में रखिए तो ये आपको Paralyze करने लगेगी और आप कुछ नहीं कर पायेंगे।
तालिया।
बहुत अच्छे सब तालियां बजाए चम्पू के लिए।
अरे वाह sir आपने हमे कितनी सरलता से समझा दिया कि जीवन में आने वाली चुनोतियों और समस्याओ के बारे में सोचना जरूरी है पर उससे भी ज्यादा जरूरी है आप stressed में नहीं रहेगें और हर रोज मज़बूती ओर ताज़गी से आगे बढ़ेंगे।

प्रेरक–कथा : कमल सोगानी

तो दुःख और भी बढ़ जाता

एक बस्ती के स्कूल में सज्जन नाम के एक गुरुजी बच्चों को पढ़ाया करते थे। बच्चों को ज्ञानवर्धक बातें व उपदेश भी दिया करते ताकि बच्चे उन बातों पर अमल कर सकें। इसके अतिरिक्त वे अपने तमाम कार्यों को पूर्ण निष्ठा, लगन से भी किया करते। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र 'जीवन' को भी नेक शिक्षा दी थी। जीवन भी बस्ती के ही स्कूल में पढ़ता था। अपने पिता के ही समान वह भी अत्यंत शिष्ट, अनुशासित और अपना कार्य पूर्ण मनोयोग से करने वाला था। उसके सहपाठी उसके इन्हीं गुणों के कारण उससे बहुत स्नेह करते थे।

एक दिन गुरुजी के साथ जीवन स्कूल नहीं आया। उसके मित्रों को उसकी अनुपस्थिति बहुत खली...।

जब गुरुजी छुट्टी कर घर जाने लगे तो छात्रों ने जीवन के न आने का कारण पूछा तो वे भारी मन से बोले– "बच्चों! अब जीवन इस जीवन में कभी नहीं आयेगा, उसे अचानक बुखार आया और वह हमें छोड़कर सदा–सदा के लिए चला गया...।"

यह अजीब बात सुनते ही तमाम छात्र स्तब्ध रह गये। उनकी आंखों से टपटप आंसू बहने लगे। उन्हें हैरानी भी हुई कि इतने दर्दनाक हादसे के बावजूद गुरुजी पढ़ाने कैसे आ गये?

बच्चों ने इस संदर्भ में जब गुरुजी से पूछा, तो वे बोले– "मेरे दो परिवार हैं। उस परिवार के बालक का बिछुड़ना असहनीय अवश्य है, किन्तु उसके कारण इस परिवार के बालकों का हक मारता, तो दुःख और भी बढ़ जाता। हाँ, जीवन के लिए जो कुछ कर सकता था, पूर्ण मनोयोग से किया। अब तुम्हारे लिए जो कर सकता हूँ, उसे क्यों न करता?"

बच्चे अपने गुरुजी की इस विशाल हृदयता को देख श्रद्धावन्त हो गए।

बाल कविता : सुनील कुमार शर्मा

आ गई ठण्ड

फ्रिज, कूलर, पंखे, सब बंद,
लो भैया आ गई है ठण्ड।

स्वेटर, कोट मफलर, दस्ताने,
पहने सब हो गये मस्ताने।

आईसक्रीम, ठण्डे शर्बत गुम,
गरम मूंगफली ले लो तुम।

थर–थर–थर–थर कांपे तन,
फिर भी भैया खुश है मन।

गई गर्मी झुलसाने वाली,
आ गई ठण्ड हर्षाने वाली।

चंपक वन का राजा सिंहराज बहुत ही न्यायप्रिय शासक था। उसकी न्यायप्रियता के किस्से जंगल के जानवर खूब सुनाया करते थे। जब पड़ौसी नीरज वन के जानवरों ने सिंहराज की न्यायप्रियता के अनोखे किस्से सूने तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ।

एक दिन नीरज वन का राजा बाघसिंह अपनी सभा में बैठा हुआ था उसी समय मोना लोमड़ी ने दरबार में प्रवेश किया। उसने अपने राजा का अभिवादन किया और कहा– "महाराज वीरू खरगोश ने मेरी सोने की चैन चुरा ली है। जिसे पहनकर वह जंगल में स्वंतत्र घूम रहा है। कृपया मेरी सोने की चैन वापस दिलवा दो।"

बाघसिंह ने अपने सिपाही पंकज भालू को वीरू खरगोश को दरबार में लाने के लिए भेज दिया। कुछ ही समय बाद पंकज भालू के साथ वीरू ने दरबार में प्रवेश किया तो नीरज वन के महाराज ने उससे उस चैन की जानकारी चाही तो उसने इतराते हुए कहा– "महाराज! यह चैन तो मेरी ही है। मोना आपसे झूठ बोल रही है। कृपया आप इसे कठोर दण्ड दें।" वहीं दरबार में ही वीरू व मोना के मध्य वाक्युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों एक–दूसरे पर आरोपों की झड़ियां लगाने लगे।

राजा बाघसिंह ने उन दोनों को खामोश कर दिया और दोनों से ही अनेकों प्रकार के सवाल कर दिये। लेकिन वे दोनों ही उनके किसी भी

सवाल का उचित जवाब नहीं दे पाये। जिसके कारण राजा उनका न्याय नहीं कर पाये। उन्होंने अगले दिवस दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया। अगले दिवस उन्होंने अपने सलाहकार गजराज से बात की। गजराज ने कहा– "महाराज, कृपया आप चंपक वन के राजा सिंहराज से इनका न्याय करायें, वे बहुत ही न्यायप्रिय शासक हैं। उन्होंने आज तक किसी भी व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं किया है।"

नीरज वन के राजा बाघसिंह ने चंपक वन के सिंहराज के दरबार में उपस्थित होकर अपना परिचय दिया और आने का कारण बताया। इसके बाद ही उन्होंने अपने दरबारी मोरध्वज से कहा कि, "मोना व वीरू को महाराज के सामने उपस्थित करो।"

नीरज वन के दरबारी मोरध्वज ने उन दोनों को दरबार में प्रस्तुत किया तो चंपक वन का दरबारी मन्नू गीदड़ ने उन दोनों को मुजरिम के कठघरे में खड़ा कर दिया।

सिंहराज ने बारी–बारी से दोनों से कई प्रकार के सवाल किये। जिनका जबाब सुनकर राजा सिंहराज समझ चुके थे कि वह सोने की चैन उनमें से किसी की भी नहीं थी। लेकिन चतुर मोना ने राजा के सवालों का जवाब सही दिया था। इसलिए न्याय के हिसाब से वह चैन मोना को देनी थी। लेकिन वे जानते थे कि यह सच्चा न्याय नहीं है क्योंकि उस चैन का वास्तविक हकदार तो कोई और ही है। न्यायप्रिय राजा सिंहराज ने कुछ देर सोचते हुए मन ही मन निर्णय लिया कि इस चैन के असली मालिक का पता लगाया जाये क्योंकि उन्हें सच्चा न्याय जो करना था।

महाराज सिंहराज ने वीरू से वह सोने की चैन अपने हाथों में लेकर कहा कि– "वास्तव में यह चैन तुम दोनों की ही नहीं है। बताओ यह चैन किसकी है?"

सिंहराज की कठोर गर्जना सुनकर वे दोनों ही एक बूत की भाँति खड़े रहे। न्यायप्रिय राजा ने अपने सिपाही वीनू हिरण व गबरू ऊँट को आदेश दिया कि दोनों को सौ–सौ कोड़े लगाये जायें। सौ कोड़ों की सजा सुनकर वीरू जोर–जोर से रोने लगा और उसने हाथ जोड़कर कहा– "महाराज! यह चैन वास्तव में मेरी नहीं है। इसे तो मोना मेरे पास बेचने के लिए लायी थी। लेकिन मुझे लालच आ गया और मैंने चैन भी रख ली

और मोना को रुपये भी नहीं दिये।

वीरू की बात सुनकर सिंहराज ने मोना को सम्बोधित करते हुए कहा, ''मोना सच–सच बता वरना तुझे इससे भी भयंकर सजा मिलेगी।''

मोना सिंहराज की गर्जना सुनकर रो पड़ी और बोली– ''हे न्यायप्रिय राजा, मैं बीमार मीनू बकरी से मिलने उसके घर गयी थी तो यह चैन मैं उसके घर से चुरा लायी! मैंने सोचा मीनू तो बीमार है उसे तो पता भी नहीं चलेगा कि उसकी चैन को कौन चुरा ले गया। महाराज मैं तो बिना मतलब ही इस पीतल की चैन को सोने की समझ बैठी थी। मुझे क्या पता था कि इसके चक्कर में मैं स्वयं ही फंस जाऊंगी।''

सिंहराज ने वह चैन नीरज वन के राजा बाघसिंह को देते हुए कहा– ''राजन! आप स्वयं इस चैन को बीमार मीनू को देकर आना और इन दोनों को सौ–सौ कोड़े लगाये जायें।

उन्होंने आगे कहा कि अगर इन दोनों में से किसी भी एक की यह चैन होती तो मेरे द्वारा इस चैन को पीतल की चैन बताने पर ये इस बात पर अडिग रहते और कहते कि महाराज यह चैन पीतल की नहीं सोने की है। मैं इनकी इसी बात से समझ गया कि चैन का असली हकदार तो कोई और है।

इस प्रकार एक बार फिर राजा सिंहराज ने सच्चा न्याय करके सभी को अचंभित कर दिया। सम्पूर्ण दरबारी व प्रजा न्यायप्रिय राजा सिंहराज की जय–जयकार करने लगी।

स्वास्थ्य : प्रस्तुति कैलाश जैन, एडवोकेट

शहद : स्वाद और सेहत का अनोखा संगम

'शहद' अथवा 'मधु' मिठास का वह खजाना है, जिसका नाम सुनने मात्र से ही मुंह में मिठास–सी घुलने लगती है। अब तक ऐसी कोई तरल व मीठी वस्तु वैज्ञानिक नहीं खोज पाए हैं, जो शहद से अधिक शुद्ध और मीठी हो। शहद की उपयोगिता और लोकप्रियता विश्व–व्यापी है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि शहद को जो महत्ता प्राप्त हो रही है, वह आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों का परिणाम नहीं है अपितु हजारों सालों पहले से पूरे विश्व में, सभी धर्मों व धर्म–शास्त्रों में तथा सभी सभ्यताओं में शहद को एक महत्वपूर्ण, पवित्र और अत्यंत उपयोगी पदार्थ माना जाता रहा है।

संभवतः शहद का इतिहास मानव–सभ्यता के इतिहास जितना ही पुराना है। सभ्यता के आदि–काल से ही शहद एक उत्तम और प्रिय आहार के रूप में स्वीकारा जाता रहा है। मिस्र के अति–प्राचीन पिरामिडों तथा ओबेलिस्क निर्माणों पर शहद का आहार व औषधि के रूप में उपयोग के जो विवरण प्राप्त हुए हैं, वह शहद की अनोखी रोग–निवारक क्षमता को उजागर करते हैं। सन् 1923 में मिस्र के बादशाह फराओ तूतेन खामेन की कब्र पर पिरामिड में रूसी वैज्ञानिकों ने शहद का एक पात्र खोजा। जिसमें हजारों वर्ष पुराना शहद था। इतना पुराना होने के बावजूद शहद पूर्णतया शुद्ध था। उसके स्वाद व गुण में कोई अंतर नहीं आया था। ऐसा वस्तुतः शहद की रोगाणुनाशक क्षमता के कारण ही संभव है।

पौराणिक व धार्मिक दृष्टि से भी शहद को पर्याप्त महत्व प्राप्त है। हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान विष्णु को कमल पर आसीन मधुमक्खी के रूप में चित्रित किया गया है। प्राचीन यूनानी देवताओं को अमर माना जाता था क्योंकि उनका आहार शहद से निर्मित एम्ब्रोसिया होता था।

चीन, मिस्र, बेबीलोन, हिब्रू, ग्रीक आदि सभ्यताओं में शहद को एक पवित्र वस्तु व रोग निवारक औषधि के रूप में सम्मान प्राप्त था। ईसाई धर्म में स्वर्ग का वर्णन दूध और शहद से युक्त देश के रूप में किया गया है। इस्लामी विश्वासों के अनुसार यह माना जाता है कि जन्नत में भोजन के रूप में दूध और मधु प्राप्त होंगे। यहूदी शहद को धार्मिक पवित्रता के साथ बल व बुद्धिवर्धक पदार्थ मानते हैं। हिन्दू धर्म में जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों में शहद को एक अनिवार्य पदार्थ बताया गया है। विवाह संस्कारों में मधुपर्क विधि में शहद को आवश्यक बताया गया है।

महान गणितज्ञ पाइथोगोरस अपने 90 वर्ष के दीर्घ जीवन में नियमित रूप से शहद का सेवन करते थे। रोमन कवि ओविड शहद के बहुत बड़े प्रशसंक थे और उन्होंने शहद का यशोगान करते हुए कई कविताएं लिखीं। शतायु जीवन जीने वाले डेमोक्रेटस प्रतिदिन भोजन के साथ शहद का उपयोग करते थे। महान दार्शनिक अरस्तू की मान्यता थी कि शहद व्यक्ति को स्वस्थ व दीर्घायु बनाने की अद्भुत क्षमता रखता है।

वैसे तो शहद की आरोग्य क्षमता और रोगाणुनाशक क्षमता सदियों पूर्व सिद्ध हो चुकी है किंतु अमेरिकी चिकित्सा विज्ञानी डाक्टर ए.वी. स्टुअर्टसेंट ने शहद के गुणों व क्षमता पर व्यापक अनुसंधान व शोध करने के बाद पाया कि पुराने श्वास रोग (दमा) और पेचिस में पाए जाने वाले रोगाणु 48 घंटों तक शहद में रखने से मर गए और टाइफाइड के रोगाणु 120 घंटों की अवधि में समूल नष्ट हो गए। प्रयोग के बाद डाक्टर स्टुअर्टवेंट ने बताया कि इसकी वजह शहद की क्षमता है, जिससे वह आसपास की नमी को अवशोषित कर लेता है। कोलोरेडो यूर्निवसिटी के जीवाणु विभाग के अध्यक्ष डाक्टर सेंक भी कई प्रयोगों के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि शहद में अनेक रोगों के रोगाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत क्षमता है। प्रसिद्ध खाद्य वैज्ञानिक डाक्टर जी डब्ल्यू. एन. थामन ने 'लेसेन्ट' पत्रिका में प्रकाशित अपने लेख में शहद को रोगी की आंतरिक शक्ति बढ़ाने वाला, हृदय की गति में वृद्धि करने वाला तथा मांसपेशियों को दृढ़ता प्रदान करने वाला पदार्थ बताया है।

यदि शहद का रासायनिक विश्लेषण किया जाए, तो इसमें सत्रह से तेईस प्रतिशत तक जल, 65 प्रतिशत तक फल व अंगूर की शर्करा एवं लगभग दस प्रतिशत तक खनिज पदार्थ होते हैं, जिनमें पोटेशियम, गंधक, सिलीका, लोहा, तांबा, मैंगनीज आदि शामिल हैं। इसके अलावा ग्लूकोनिक एसिड, साइट्रिक एसिड, लैकटिक एसिड जैसे अम्लीय पदार्थ भी शहद में पाए जाते हैं। साथ ही 0.25 प्रतिशत प्रोटीन व लगभग एक प्रतिशत एंजाइम्स व विटामिन का भी शहद में समावेश रहता है।

शहद में खासतौर पर बैक्टीरिया–निरोधक तथा फफूंद निरोधक गुण होते हैं। शहद का कैलोरिक मूल्य अन्य पदार्थों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। सौ ग्राम शहद में 310 से 350 कैलोरी तक होती है। कठोर मेहनत करने वाले व्यक्तियों व खिलाड़ियों के लिए शहद तत्काल शक्ति देने वाला पदार्थ है। सेवन के तुरंत बाद रक्त–प्रवाह में शामिल होकर यह शरीर को ऊर्जा व बल देती है। शहद पाचन क्रिया से लेकर जख्म भरने तक सैंकड़ों रोगों में औषधि है।

ऊँट की पीठ पर कूबड़ क्यों होता है

जानकारी : पृथ्वीराज

ऊँट को 'रेगिस्तान का जहाज' कहा जाता है। इस जीव को अपनी यात्राओं के दौरान कई बार कई–कई दिनों तक भोजन नहीं मिलता। इसकी पीठ पर बने कूबड़ की उपयोगिता ऐसे समय के लिए ही होती है। क्योंकि पीठ का यह उभार वास्तव में चर्बी के एकत्रित होने से बनता है। रेगिस्तानी इलाके को पार करते हुए जब ऊँट को भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता तब तक कूबड़ में एकत्रित चर्बी ही इसे ऊर्जा प्रदान करती है।

भोजन के अभाव में या ऊँट लंबी यात्राओं के दौरान ऊर्जा के लिए पीठ पर संचित इस चर्बी (वसा) का ही लगातार उपयोग करता है तो यह कूबड़ धीरे–धीरे सिकुड़कर लटकता जाता है परन्तु कुछ दिन के आराम के साथ–साथ जब इसे पुनः भरपेट पौष्टिक भोजन मिलता है तो पीठ का यह गुंबद (कूबड़) सीधा और पुष्ट होता जाता है और पुनः अगली लम्बी यात्रा के लिए स्वयं को फिर से तैयार कर लेता है।

आपके पत्र मिले

नये साल की शुभकामना

नये साल की शुभकामना,
सबके मन में सबके लिए प्यार,
न हो मन में किसी के लिए तकरार।

सबके मुख पर हो हँसी की लाली,
सबके घर में बँटे प्यार की प्याली।
आओ सब खुशियां मनाएं,
नये साल की मुबारकां पाएं।
किसी के घर में न हो कोई परेशानी,

सबके घर में आए खुशहाली।
सबके मन में हो पढ़ने–लिखने की आस,

सब हों अच्छे नम्बरों से पास।
सबके मन में हो अच्छे गुण,
किसी के मन में न हो कोई अवगुण।

सेवा, सत्संग, सुमिरण कर लो,
इन सबके गुणों को हासिल कर लो।

नये साल की शुभकामना,
सबके मन में हो अच्छी भावना।

–सिद्धेश प्रजापति (दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का बहुत बेसब्री से इन्तजार करती हूँ। पत्रिका में कहानियां मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। चित्र भी जिज्ञासापूर्ण होते हैं। महापुरूषों से जुड़े प्रेरक–प्रसंग वाक्य अच्छे होते हैं। कविताएं मन में गुदगुदी पैदा करती हैं। सामान्य ज्ञान से जहां हमारी जानकारी में वृद्धि होती है। वहीं चुटकलों से हम हँसते हैं।

–नलिनी कुमारी (महुअवां महुई)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं हँसती दुनिया के आने का बेसबरी से इन्तजार करती हूँ। मैं हँसती दुनिया पढ़ती हूँ तथा अपने सहपाठियों एवं साथियों को भी पढ़ाती हूँ।

'भैया से पूछो' बच्चों की जिज्ञासा शान्त करता है तथा ज्ञान में वृद्धि करता है।

–पूजा सेंगर (श्वेता) (बसरेहर)

मैं हँसती दुनिया का सवा साल से नियमित पाठक हूँ। इसमें कहानियाँ एवं कविताएं रोचक होती हैं तथा प्रेरक प्रसंग प्रेरणादायी होते हैं। आप कभी–कभी जो सामान्य ज्ञान देते हैं वह आज के समय में बच्चों के लिए जरूरी है। कृपया इसे हर महीने दिया करें।

–राजेश कुमार (हाजीपुर)

TU HI NIRANKAR

SUPER AQUA®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बेक्टीरिया विराधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएँ।

SUPER AQUA®
R.O. System

Manufacturer :
Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact Customer Care : 09910103767 09650573131

Delhi Off. G-3/115, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-85
Nr. Mother Dairy
Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashrta, (M) 09930804105

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0%
FINANCE

Email : superaqua1@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2012-14
Licence No. U (DN)-23/2012-14
Licenced to post without Pre-payment

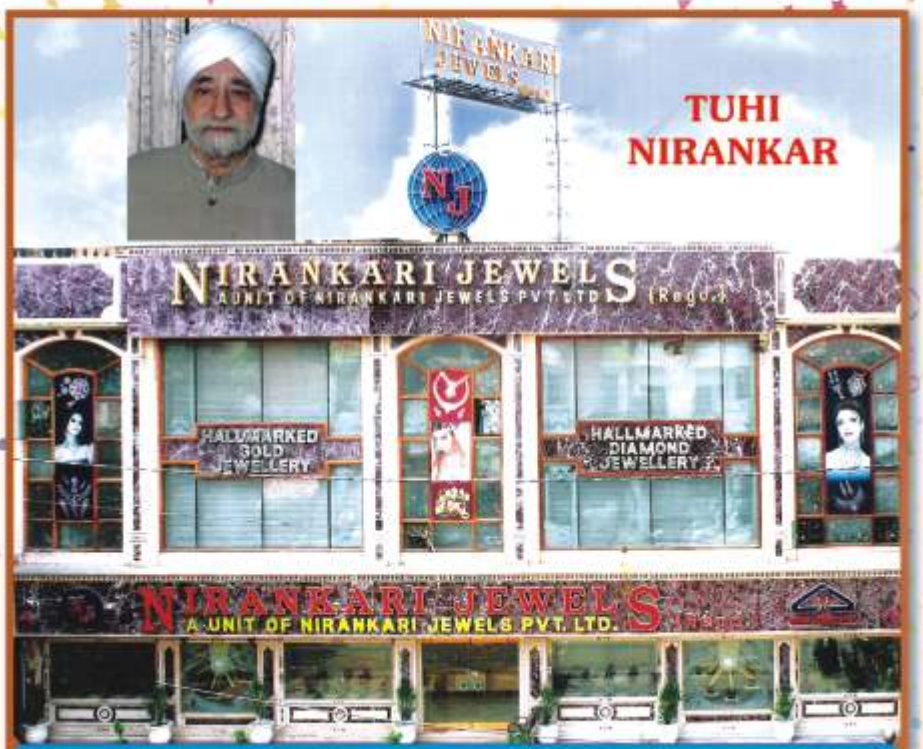

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)